क्या मांस खाना पाप है ?



लेखक :

पंडित सूफ़ी रहीम खान साहब क़ादरी M.I.
(शांति धर्म प्रचारक)

DATE :- 15th August, 2023

क्या मांस खाना पाप है ?



लेखक :

पंडित सूफ़ी रहीम खान साहब क़ादरी M.I.

(शांति धर्म प्रचारक)

DATE :- 15th August, 2023

भूमिका

हम देखते हैं कि भारत देश में कई वर्षों से क़ुर्बानी(Sacrifice) या बलि पर हिन्दू-मुस्लिम दंगे देखने को मिल रहे हैं। मुसलमानों का यह तर्क है कि उन्हें कुरआन में कुर्बानी की इजाज़त दी गई है जब कि हिन्दू कहते हैं बलि या कुर्बानी हमारे हिन्दू धर्म के विरुद्ध है।

मैंने यह पस्तक जिसका शीर्षक है **"क्या मांस खाना पाप है ?",** हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए लिखी है, और मैंने केवल हिन्दू धर्म ग्रंथों यानी वेद, पुराण, शास्त्र, उपनिषद, आदि से ही मांस भक्षण के तर्क(Proof) दिए हैं, ताकि मेरे भारत देश के हिन्दू भाई यह जान लें कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने सारे हिन्दू धर्म ग्रंथों में बलि या कुर्बानी का आदेश दिया है और सारे अवतार, ऋषि, मुनियों ने बलि दे कर मांस भक्षण किया था इस तरह हिन्दू भाईयों के दिल से मुसलमानों की दुश्मनी खत्म हो जाए।

इस पुस्तक को लिखने में मेरी सहायता करने वाले सूफ़ी मेअराजुल्लाह बेग साहब M.I. शांति धर्म प्रचारक और सूफ़ी अब्दुल रहीम ख़ालिद साहब M.I. शांति धर्म प्रचारक हैं, और जिन-जिन लोगों ने इस पुस्तक के लिए समय और धन से सहायता की है मैं इन सबका आभारी हूँ और परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से यह प्रार्थना करता हूँ कि इन सबसे और दीन-धर्म का कार्य ले, **आमीन।**

सहायक पुस्तकें :

1) "सरवरे आलम यानी जगतगुरू" लेखक हज़रत मौलाना सिद्दीक़ दीनदार चन्नबस्वेश्वर साहब क़िबला।
2) "दाफए वस्वासे आर्य" लेखक हज़रत मौलाना सिद्दीक़ दीनदार चन्नबस्वेश्वर साहब क़िबला।
3) अन्य अनेक स्रोतों से जानकारियाँ ली गई हैं।

मैं इस पुस्तक को **कल्कि अवतार-जगतगुरू-नराशंस-अंतिम ऋषि-पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद-ए-मुजतबा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम** को अर्पित करता हूँ और परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि **"ऐ ईश्वर ! इस पुस्तक को हिन्दू-मुस्लिम एकता का साधन बना"**, आमीन, **तथास्तु**।

पंडित सूफ़ी रहीम ख़ान क़ादरी M.I.
(शांति धर्म प्रचारक)
Dated : 15th August 2023

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ

وَ یَذۡکُرُوا اسۡمَ اللّٰہِ فِیۡۤ اَیَّامٍ مَّعۡلُوۡمٰتٍ عَلٰی مَا رَزَقَہُمۡ مِّنۡۢ بَہِیۡمَۃِ الۡاَنۡعَامِ ۚ فَکُلُوۡا مِنۡہَا وَ اَطۡعِمُوا الۡبَآئِسَ الۡفَقِیۡرَ (क़ुरआन : सूरह हज, आयत : 28)

अर्थात : ऐ ईमान वालो ! तुम क़ुर्बान(बलि-Sacrifice) करने वाले पशुओं पर अल्लाह का नाम पढ़ो और उनका मांस खाओ, ग़रीबों और पुण्यवान लोगों को भी खिलाकर ख़ुश करो।

मैं आपके सामने भारत में गौरक्षा के नाम पर तेज़ी से बिगड़ती हुई परिस्थिति पर गंभीरता से अपने विचार रखना चाहता हूँ एक सौ चालीस करोड़ से भरा हुआ हमारा भारत देश कहीं ऐसा न हो कि केवल **"गाय"** के नाम पर लड़ मर कर तबाह व बर्बाद हो जाए। पिछले कुछ सालों से यह मुद्दा गंभीर सूरत इख़्तियार कर रहा है। यह मानी हुई बात है कि दुनिया में जितने भी धर्म या मज़ाहिब (Religions) मौजूद हैं और उनकी धर्म ग्रंथों में स्पष्ट रूप से यह बात बताई गई है कि इस ब्रह्मांड में या इस पृथ्वी पर सबसे ज़्यादा सर्वश्रेष्ठ जीवन किसी का है तो वह केवल इंसान का है इस बात को आज की विज्ञान(Science) भी मानती है कि मानव से श्रेष्ठ इस धरती पर कोई प्राणी नहीं। दुनिया के हर धर्म ग्रंथ में बेकसूर(निर्दोष) इंसानों की हत्या करने को महापाप बताया गया है जैसे कि क़ुरआने करीम सूरह मायदा पाँचवीं सूरत आयत नंबर 32 में बताया गया है कि

مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا अर्थ : "जिस किसी ने किसी को क़त्ल(हत्या) किया बिना इसके कि उसने कोई क़त्ल का गुनाह किया हो या देश में फ़साद(दंगा) बरपा किया हो, वास्तव में उसने सारे इंसानों को क़त्ल किया" और हिंदू धर्म के अनुसार मानव सेवा को माधव सेवा कहा गया है। यह हमारा भारत देश धार्मिक देश है जिसके कारण भारत के लोग धर्म के प्रति आस्था रखने वाले ईश्वर या परमात्मा की भक्ति में डूबे हुए ऋषियों-मुनियों, अवतारों, सूफ़ी-संतों, औलिया अल्लाह से प्रेम करने वाले और मन की गहराइयों से उन सबका सम्मान करने वाले, धर्म ग्रंथों को अपने जीवन का मार्गदर्शन बनाने वाले, इंसान को साक्षात परमात्मा का रूप समझने वाले, ऐसे पवित्र भावनाओं से जिनके हृदय भरे हुए थे ऐसे भारतवासियों को कलयुग का प्रभाव इस तरह भी बदल सकता है कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता था कि केवल **"गाय"** के नाम पर

हजारों बेगुनाह इंसानों को मार डाले। वास्तव में हमारे भारत वासियों में इस परिवर्तन का कारण ना ही इनका ईश्वर है और ना ही इनके धर्म ग्रंथ हैं और भारत के इतिहास में भी इनके पूर्वजों ने कभी इस तरह गौ रक्षा के नाम पर मासूम इंसानों को मार डालने का महापाप किसी भी युग में नहीं किया। अगर गंभीरता से देखा जाए तो गौ रक्षा के नाम पर बेकसूर इंसानों को मार डालना यह राजनीतिक(Political) मुद्दा है इसका संबंध न ही धर्म ग्रंथों से है और न ऋषि-मुनि-अवतारों के जीवन चरित्र से है और ईश्वर की बनाई हुई प्रकृति के नियम हमको इस बात की अनुमति नहीं देते कि हम गौ रक्षा के नाम पर इस धरती के सर्वश्रेष्ठ जीवन पाने वाले इंसान की हत्या कर दें। मैं इस विषय में विस्तार से आप लोगों के सामने अपनी बात रखूंगा। मांस भक्षण इस मुद्दे को हल करने के लिए हमको कुछ सवालों का जवाब ढूंढना है जिससे गौ रक्षा के नाम पर बेकसूर इंसानों की हत्या का महापाप हमेशा हमेशा के लिए खत्म हो जाए।

i. पहला सवाल यह है कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने क्या इंसान को शाकाहारी(Herbivores) बनाकर पैदा किया है या मांसाहारी(Carnivores) बनाकर पैदा किया है या फिर दोनों गुणों के साथ सर्वाहारी(Omnivores) पैदा किया?

ii. दूसरा सवाल यह है अगर मानव को ईश्वर ने शाकाहारी और मांसाहारी दोनों गुणों के साथ पैदा किया है तो फिर परमेश्वर की इच्छा क्या थी? क्या उसकी इच्छा यह थी कि मानव शाकाहारी और मांसाहारी दोनों गुणों को अपने अंदर रखने के बावजूद भी वह जीवन भर शाकाहारी रहे मांस हरगिज-हरगिज न खाए और मांस खाने वाला ईश्वर की दृष्टि में पापी कहलाए या फिर बहालते मजबूरी यानी केवल जान बचाने की हद तक ही खाए वरना मांस खाना पाप कहलाए, क्या इस बात का वर्णन धर्म ग्रंथों में मिलता है? और

iii. तीसरा सवाल यह है, क्या बात है कि केवल गाय की बलि(क़ुर्बानी-Sacrifice) पर ही भारतवासियों में ग़ुस्सा छा जाता है, जीव हत्या पाप है, अहिंसो परम धर्मः, इंसान शाकाहारी है मांसाहारी नहीं, इस तरह के विषयों के चरचों की धूम होती है, हालांकि गाय के अलावा कई प्रकार के पशु प्राणी को खाने वाले लोग भी हिंदुस्तान में मौजूद हैं, इस पर किसी भी धर्म गुरु को ग़ुस्सा आता हुआ नहीं देखने को मिलता।

इन तीन सवालों को हल करने के लिए चार मूल सिद्धांतों को दृष्टि में रखना होगा, **पहला सिद्धांत** इस विशाल ब्रह्मांड को बनाने वाला इसमें चौरासी लाख (84,00,000) जीवों को पैदा करने वाला और आखिर में इंसान को सारे ब्रम्हांड और चौरासी लाख जीवों का मूल रूप या सूक्ष्म रूप बनाकर पैदा करने वाला वह परमात्मा परमेश्वर अल्लाह एक ही है जिसकी वजह से यह कभी नहीं हो सकता की परमात्मा या परमेश्वर या अल्लाह मानव समाज के कुछ लोगों को मांस खाना पाप कहे और कुछ लोगों को मांस खाना पुण्य बताए। **दूसरा सिद्धांत** यह है, कोई भी माँ-बाप हरगिज़ हरगिज़ यह नहीं चाहेंगे कि उनकी संतान आपस में लड़-मर कर तबाह और बर्बाद हो जाए, फिर वह परमेश्वर परमात्मा या अल्लाह तआला जो 70 माँओं से भी बढ़कर इंसानों से प्रेम करता है, वह हरगिज़ हरगिज़ यह नहीं चाहेगा कि इंसान केवल गाय के नाम पर लड़-मर कर तबाह और बर्बाद हो जाए, **तीसरा सिद्धांत** हर वो व्यक्ति जो परमात्मा का सच्चा भक्त होता है इसकी नज़र हमेशा परमात्मा की इच्छा पर होती है वह कभी भी राजनेताओं(Politicians) से जिनका परमात्मा से कोई भी आध्यात्मिक संबंध नहीं होता, इनके मानव समाज में फूट पैदा करने वाले भाषणों से प्रभावित नहीं होता बल्कि सारा मानव समाज जो परमात्मा की संतान है वह खुद भी सारे मानव समाज को इसी दृष्टि से देखते हुए अपने दिल में सारे मानव समाज का प्रेम और दर्द रखकर वह स्वयं मन ही मन में इस तरह के गंभीर विषयों पर परमात्मा से दुआएँ करता है प्रार्थना करता है कि ऐ ईश्वर ! ऐ परमात्मा ! यहाँ गाय को काटना पाप है तो मानव गाय से ज़्यादा श्रेष्ठ है इसकी हत्या करना महापाप है, इन पापों को खत्म करने का सही रास्ता बता। इस तरह की भावनाओं के साथ ईश्वर से प्रार्थना करते हुए इस मांस भक्षण मुद्दे का हल तलाश करने वालों को आसानी से यह मुद्दा हल हो जाएगा, वरना किसी खास समुदाय से दुश्मनी की दृष्टि रखकर इस मुद्दे को हल करना चाहे तो कभी हल न होगा। **चौथा सिद्धांत** इस गंभीर मुद्दे को हल करने के लिए हमको कभी भी प्रकृति और धार्मिक ग्रंथों का ही सहारा लेना होगा वरना अपनी अपनी बुद्धि के बल पर इस मुद्दे को हल करने की कोशिश करने पर झगड़े बढ़ने के सिवा कुछ न होगा।

आइए पहला सवाल हल करते हैं, परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने इंसान को शाकाहारी(Herbivores) बनाकर पैदा किया या मांसाहारी (Carnivores) बनाकर पैदा किया या फिर दोनों गुणों के साथ सर्वाहारी (Omnivores) बनाकर पैदा किया। प्रकृति परमात्मा की तरफ से सत्यता को जानने की ऐसी कसौटी(Criteria) है जिसको

दुनिया की कोई भी ताक़त लाखों युगों तक कुछ भी परिवर्तन नहीं कर सकती। यह भी सारी दुनिया जानती है कि प्रकृति के नियम में किसी भी मानव समाज का या समुदाय का कुछ भी दक़्ल(Interference) नहीं है बल्कि प्रकृति का हर नियम ईश्वर का बनाया हुआ होता है और इस नियम को स्वीकार करने वाला ही परमात्मा का सच्चा भक्त कहलाता है चूंकि मानव शरीर अपने अंदर सारा ब्रह्मांड रखता है जिसका प्रमाण धर्म ग्रंथों में भी है और प्रकृति में भी और आज विज्ञान(Science) भी इस बात को जान चुका है कि इंसान सारे ब्रह्मांड का पिंड है यानी बीज रुप है जैसा कि धर्म ग्रंथों मे आया है **"यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे"** वास्तव में ब्रह्मांड में जो कुछ भी है वह एक मानव के बच्चे में मौजूद है जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है :

आत्मसंभूतदाकाशं आकाशाद्वायु वायुरग्नि अग्नि रापहः ।

तद्भवेपृद्वी पृधव्यादौषधं औषदादन्नं अन्नद्रेतः रेतस्यह पुरुषो ।।

अर्थ : आत्मा से आकाश बना, आकाश के बाद वायु बनी, वायु के बाद अग्नि बनी, अग्नि के बाद पानी बना, पानी के बाद ज़मीन बनी, ज़मीन से शाकाहारी पदार्थ बने, शाकाहारी पदार्थ से ख़ुराक़ बना, ख़ुराक़ से खून बना यानी पशु प्राणी बने और खून से यानी पशु प्राणी से इंसान बना।

इसको इस प्रकार भी कहा गया है :

जीवयोनि सहास्रेसो भूतासंख्यांत जाति अंत्य जाति
श-त-शूद्रो तदवैश्य पंचविंशतिहि तदवैश्य शोडशोराजा
तदराजा नविन द्वजीहि तद्दुजाश्टांच भक्तांचा भक्तस्त्रेणि
जंगमः जंगमो रुद्ररुपंतो पुनर्जन्मो न विद्दति ।।"

अर्थ : चौरासी या हज़ारों शर्मगाहों(योनियों) से जीव पैदा होकर आखरी सूरत इंसान की होती है। वह पहला इंसान चंडाल कहलाता है, यह जब सौ(100) जन्म पार करता है तो शूद्र बनकर आता है, इसके बाद (25) जन्म पार करके वैश्य के जन्म में आता है, और वैश्य (16) जन्म पार करके क्षत्रिय के जन्म में आता है, और क्षत्रिय (9) जन्म पार करके ब्राह्मण बनता है, और ब्राह्मण (8) जन्म पार के भक्त बनता है, भक्त (3) जन्म पार करके जंगम बनता है, जंगम रुद्र का रूप है इसको पुनर्जन्म नहीं होता (जंगम जगत भरिता कहते हैं वो मुस्लिम है)।

चौरासी लाख (84,00,000) योनियों से जीव पैदा होकर आखिरी सूरत इंसान की बनती है, कबीर दास जी कहते हैं :

"लख चौरासी फेरे फिर कर सुंदर नर तन पाया
खाया पिया सुख से सोया ना हक़ ज़माना खोया
हीरे जैसा जन्म था कौड़ी मोल गवाया"

और पवित्र क़ुरआन में भी इसका विवरण इस तरह है :

"सनूरीहिम आयातिना फ़िल आफ़ाक़ी व फ़ी अनफ़ुसिहिम" अर्थ "हम शीघ्र ही हमारे चिन्ह जो ब्रह्मांड में हैं दिखाएंगे और खुद इनकी अपनी जानों में दिखाएँगे"। इन श्लोकों के आधार से सिद्ध होता है कि इंसान सारे ब्रह्मांड का बीज रूप है। अब हम प्रकृति को सामने रख कर देखें तो पता चलता है कि जिस तरह ब्रह्मांड पंचभूत यानी आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी से बना है इसी तरह मानव का शरीर भी इन पंचभूतों से ही बना है और जिस प्रकार भी जीव इस धरती पर पाए जाते हैं वह सब सूक्ष्म रूप में मानव शरीर में जमा(एकत्र) हैं इस बात के प्रकृति में हज़ारों प्रमाण हैं मैं केवल कुछ प्रमाण ही आपको दिखाऊँगा, मानव हर प्राणी का गुण अपने अंदर रखता है जैसे शेर की तरह अपने शत्रुओं पर आक्रमण करना, भेड़िये की तरह ज़ुल्म करना, लोमड़ी की तरह चालाकी करना, गधे की तरह मूर्खता दिखाना, घोड़े की तरह युद्ध के मैदान में कूद पड़ना, बैल की तरह बोझ ढोना, कोयल की तरह गाना, मोर की तरह नाचना, गाय की तरह नरम जीवन बिताना, हर जानवर के भोजन को खाना और इसको पचा लेना, पृथ्वी में बसने वाले जानवरों की हर जगह पर इंसान का भी जिंदगी गुज़ारना, प्राणियों के बच्चे पैदा करने के अलग-अलग मौसम होते हैं मगर मानव का हर मौसम में बच्चे पैदा करना और सारे जानवरों की बोलियाँ अपने एक ही मुंह से निकालना, इस तरह प्रकृति में मानव सारे ब्रह्मांड का पिण्ड यानी बीज रूप होने के हज़ारों प्रमाण मिलते हैं। आज विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि जब बच्चा माँ के गर्भ में परवरिश पाता है तो वीर्य से कई प्राणियों की सूरतें बदलता हुआ आखिर में इंसान की सूरत में आता है और विज्ञान ने यह भी साबित किया है कि इंसान के खून में ब्रह्मांड के सारे जीव सूक्ष्म रूप में दिखाई देते हैं। यह सारे प्रमाण सिद्ध करते हैं कि इंसान सारे जीवों का बीज रूप है मूल रूप है। इस बुनियाद पर मानव शरीर को परखा जाए तो हमको मालूम होता है कि यह मांसाहारी और शाकाहारी दोनों गुणों के साथ पैदा किया गया है, मांस

भक्षण परमात्मा का नियम प्रकृति में नज़र आता है, ईश्वर ने क्रूर प्राणियों को पैदा किया, जैसे शेरों को पैदा किया और उनके लिए मांस खाने वाले दांत बनाए, पंजे दिया और उनके पेट में मांस पचाने की पाचन शक्ति दी और इनकी खुराक के लिए हिरन बकरी आदि पशुओं को पैदा किया। जब इंसान ब्रह्मांड का पिंड है तो इसके पेट से इन सब जानवरों की क्रिया होनी चाहिए।

पहला प्रमाण यह है, मांसाहारी प्राणियों के नुकीले दांत यानी(Canine Teeth) होते हैं, शाकाहारी प्राणियों के साफ़(Flat) दांत होते हैं मगर इंसान में दोनों प्रकार के दांत पाए जाते हैं, 4 नुकीले कोचलियाँ जिसको छेदक दांत (Canine Teeth) कहते हैं वह पाए जाते हैं और बाकी सीधे दांत होते हैं, इस से सिद्ध होता है कि इंसान के अंदर मांसाहारी और शाकाहारी दोनों गुण मौजूद हैं।

दूसरा प्रमाण यह है, धरती पर पाए जाने वाले प्राणियों में पाचन शक्ति(Digestive System) ईश्वर की दी हुई है, जो मांसाहारी और शाकाहारी प्राणियों को अलग अलग कर देती है अगर हम शेर को मूर्ख समझ कर मांस छुड़ा दें और इसको घास के गोले ज़बरदस्ती खिलाएँ, कुछ दिन मे वह मर जाएगा, क्योंकि उसके पेट में घास पचाने की ताक़त नहीं और इस तरह गाय को ज़बरदस्ती मांस खिलाएँ वह भी कुछ दिन मे मर जाएगी और यह इस बात का प्रमाण है कि मांस पचाने की ताक़त उसके पेट में नहीं और जब कि इंसान के पेट में ईश्वर ने दोनों प्रकार के भोजन यानी मांस और भाजीपाला पचाने की शक्ति दी है, यही कारण है कि इंसान मांस खाकर पचा लेता है यानी अंदर के क्रूर प्राणी मांस खा जाते हैं इसको इंसान पचाना कहता है, इस से सिद्ध होता है कि इंसान के अंदर मांसाहारी और शाकाहारी दोनों गुण मौजूद हैं। प्रकृति के नियम को सही न जानकर कुछ लोगों ने इंसान को शाकाहारी सिद्ध करने की कोशिश की है :

I. **पहला मुग़ालता**(ग़लत फ़हमी या भ्रम) इन लोगों का यह है कि जिस प्रकार मांसाहारी प्राणी है वह जीभ से पानी पीते हैं चूंकि इंसान होठों से खींच कर पानी पीता है इस वजह से वह मांसाहारी नहीं, इसका जवाब यह है कि हमने पहले ही सिद्ध किया है इंसान सारे ब्रह्मांड का पिंड है यानी इंसान चौरासी लाख जीवों का बीज रूप है मूल रूप है, इसलिए यह जरूरी ठहरा कि वह क्रिया जो अधिक प्राणियों में समान हो उस क्रिया का प्रभाव मानव शरीर पर ज़्यादा होना चाहिए यानी मानव शरीर में जिन प्राणियों की संख्या ज़्यादा हो उनकी ही क्रिया का प्रभाव मानव शरीर पर ज़्यादा नज़र

आता है, मिसाल के तौर पर चार पैरों से चलने वाले प्राणीयों में गिरगिट, छिपकली, कुत्ता, भेड़िया, बैल, हाथी, आदि हैं, इन में बच्चा पैदा करने वाले प्राणी ज़्यादा हैं इसलिए इंसान को ज़्यादा प्राणियों कि इस क्रिया ने बच्चा पैदा करने पर मजबूर किया, दूसरी मिसाल यह है कि पक्षियों की तुलना में ज़मीन पर चलने वाले और रेंगने वाले प्राणियों की संख्या ज़्यादा है इस वजह से इंसान को ज़्यादा प्राणियों की इस क्रिया ने ज़मीन पर चलने पर मजबूर किया, तीसरी मिसाल घास खाने वाले प्राणी मांस खाने वाले प्राणियों से ज़्यादा हैं इसी वजह से इंसान के बत्तीस(32) दांतों में केवल चार छेदक दांत मांसाहारी प्राणियों के हैं उसके अतिरिक्त सब घास खाने वाले प्राणियों के हैं जिसके कारण इंसान मांस के मुक़ाबले में शाकाहारी भोजन ज़्यादा खाता है यही कारण बना कि मानव जो सारे ब्रह्मांड का पिंड है जिसके शरीर में शाकाहारी प्राणी ज़्यादा है जो पानी खींच कर पीते हैं इनकी इसी क्रिया के प्रभाव से मानव भी पानी खींच कर पीता है और इसको गुणप्रधानी कहते हैं।

II. **दूसरी ग़लतफ़हमी** इन लोगों की यह है कि मांसाहारी प्राणियों की जीभ(Tongue) पर कांटे होते हैं और घास खाने वाले प्राणियों की जीभ खुरदरी(Rough) होती है क्योंकि इंसान की जीभ खुरदरी होती है इस वजह से यह शाकाहारी है, यह ग़लतफ़हमी का भी जवाब यही है कि इंसान सारे जीवों का बीज रूप है पशुओं में क्रूर प्राणी यानी मांसाहारी प्राणी तनासुब(अनुपात-Ratio) के हिसाब से अपना 8 वां नंबर रखते हैं इसका तनासुब(Ratio) इंसान के दांतो से भी लगाया जा सकता है यानी 32 दांतों में 4 छेदक दांत और 28 सीधे दांत है इसका तनासुब 1:7 होता है यानी सात हिस्से शाकाहारी प्राणियों के मुक़ाबले में सिर्फ एक हिस्सा मांसाहारी है, इसी नियम के अनुसार इंसान की जीभ जिस हद तक खुरदरी होनी चाहिए उसी हद तक खुरदरी है।

III. **तीसरी ग़लतफ़हमी** इन लोगों की यह है कि मांसाहारी प्राणी जन्म के समय आंख बंद करके पैदा होते हैं और शाकाहारी खुली आंख से पैदा होते हैं इंसान चूंकि जन्म के समय आंख खुली रखकर पैदा होता है इसलिए इंसान मांसाहारी नहीं।

IV. और इसी प्रकार **चौथी ग़लतफ़हमी** इन लोगों की यह भी है कि मांसाहारी प्राणी के नाखून तीखे यानी नुकीले होते हैं और शाकाहारी प्राणी के चपटे होते हैं चूंकि इंसान के नाखून चपटे होते हैं इसलिए इंसान मांसाहारी नहीं है, इन ग़लतफ़हमियों का जवाब भी यही है जो हम अब तक बयान करते आ रहे हैं यानी इंसान अपने शरीर में चौरासी

लाख जीवों को सूक्ष्म रूप में रखा हुआ है जिसमें शाकाहारी प्राणी मांसाहारी प्राणियों के मुक़ाबले में सात(7) गुना ज़्यादा हैं, इसी वजह से शाकाहारी प्राणियों की क्रिया जन्म के समय आंखें खुली रखना और चपटे नाखून से पैदा होना यह मानव के शरीर पर अपना असर डाली है जिसके कारण इंसान जन्म के समय आंखें खुली रखना और चपटे नाखूनों के साथ पैदा होता है।

V. इन लोगों की **पाँचवी ग़लतफ़हमी** यह है कि मांसाहारी प्राणी कच्चा मांस पचा सकते हैं मगर इंसान मांस को कच्चा पचा नहीं सकता मर जाएगा, इसलिए इंसान मांस पचाने के लिए मांस को भून कर मसाले लगाकर मज़ेदार बनाकर खाता है, इसका जवाब यह है कि दुनिया में जितने भी शाकाहारी प्राणी हैं वह किसी भी सूरत से मांस पचा नहीं सकते, मतलब यह कि वह न ही कच्चा मांस पचा सकते हैं और न ही भूना हुआ, पका हुआ मांस, क्योंकि इनकी पाचन क्रिया में मांस पचाने की ताक़त होती ही नहीं। दूसरी बात कोई भी प्राणी चाहे वह मांसाहारी हो या शाकाहारी हो अपने भोजन को भून कर पकाकर नहीं खाते मगर इंसान अपने हर भोजन को चाहे वह अनाज हो, तरकारी हो, मांस हो, सब भून कर पकाकर खाता है, इसलिए कि यह खनखनाती यानी पुख्ती मिट्टी से बना है यहाँ तक कि पशुओं के नियम के विरुद्ध इंसान पानी भी गरम करके नहाता है क्योंकि यह पुख्ता है, कुछ लोगों ने मानव को मांसाहारी मान कर भी यह साबित करने की कोशिश की है कि मानव को मांस नहीं खाना चाहिए जैसा कि कुछ लोगों ने कहा कि तोता बावजूद मांसाहारी पक्षियों की तरह टेढ़ी चोंच रखकर भी मांस नहीं खाता इस वजह से वह ज्ञानी है बात करता है, इंसान भी बावजूद चार(4) दांत मांसाहारी के रखकर मांस न खाए तो वह भी ज्ञानी बन जाता है, इसका जवाब यह है कि टेढ़ी चोंच का होना ही मांस भक्षण का प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि फल खाने वाले पक्षियों के लिए भी टेढ़ी चोंच का होना ज़रूरी है वास्तव में मांस भक्षण का प्रमुख प्रमाण पेट की पाचन शक्ति है जो शाकाहारी प्राणियों में बिल्कुल नहीं होती, रही बात तोता मांस नहीं खाने की वजह से बात करता है या ज्ञानी हो जाता है यह बिल्कुल ग़लत है क्योंकि मैना सीधी चोंच रखकर भी खूब मांस खाती है और तोते से भी अच्छा बोलती है।

प्रकृति में मांस भक्षण का महत्व क्या है, क्या प्रकृति में मांस भक्षण केवल भोजन का ही महत्व रखता है या परमात्मा का प्रकृति में मांस भक्षण का नियम रखने में कोई मूल

उद्देश्य है, इस विषय में हमको ग़ौर करने से मालूम होता है कि दुनिया से पाप खत्म करने के लिए हर ज़माने में वीर योद्धओं की ज़रूरत होती है, मांस भक्षण से क्षत्रिय बनकर अपने शत्रुओं पर पराक्रम करने का गुण पैदा होता है शासन करने की योग्यता पैदा होती है, इसके प्रमाण में दुनिया में जितने भी शासन करने वाली क़ौमें हुई हैं वे सब मांसाहारी ही हैं और आज भी दुनिया में यही हाल है।

II) अब दूसरा सवाल यह कि अगर मानव को ईश्वर ने शाकाहारी और मांसाहारी दोनों गुणों के साथ पैदा किया तो फिर परमेश्वर की इच्छा क्या थी मानव शाकाहारी और मांसाहारी दोनों गुण अपने अंदर रखने के बावजूद भी क्या वह जीवन भर शाकाहारी रहे क्या मांस हरगिज़ हरगिज़ न खाए और क्या मांस खाने वाला ईश्वर की दृष्टि में पापी कहलाएगा या फिर बहालते मजबूरी यानी सिर्फ जान बचाने की हद तक ही खाए वरना मांस खाना पाप कहलाए, क्या इन बातों का वर्णन धर्म ग्रंथों में मिलता है ? इसका जवाब हमको "न" में मिलता है, अगर मांस भक्षण करना पाप होता और वास्तव में ईश्वर की भी यही इच्छा होती तो इस बात के प्रमाण में भारत की धार्मिक ग्रंथ भरी पड़ी होती, चार वेद जो भारत के प्राचीन काल के धार्मिक ग्रंथ हैं जिसमें बीस हज़ार(20,000) से भी अधिक मंत्र हैं, इसके अतिरिक्त 18 पुराण, 6 शास्त्र, 2 गीता और 108 उपनिषद इन सब धर्म ग्रंथों में हज़ारों श्लोक मौजूद हैं जिसको भारत के लोग ईश्वरीय वाणी ही मानते हैं मगर "मांस भक्षण करना पाप है" इस विषय में न तो इनके पास एक मंत्र है और न ही एक श्लोक। होना तो यह चाहिए था कि मांस खाना पाप है, मांस खाने वाले को ईश्वर नरक(Hell) में डालेगा, जो भी पशु प्राणी की हत्या करेगा इसको नरक प्राप्त होगा या जो कोई भी जीव हत्या करेगा उसको इस तरह का दंड दो, इन बातों का विवरण करने वाले श्लोकों और मंत्रों से इनके धर्म ग्रंथ भरी पड़ी होनी चाहिए थीं। क्योंकि ईश्वर जानता था जब तक पृथ्वी पर मानव पैदा होगा हज़ारों प्राणियों की हत्या करके खाने वाला है, इसलिए मानव को ईश्वर शुरू से ही हज़ारों मंत्रों और श्लोकों के द्वारा जीव हत्या के पाप से, मांस खाने के पाप से रोकना चाहिए था मगर भारत देश की इन सारी धार्मिक ग्रंथों में ऐसा वर्णन कहीं भी नज़र नहीं आता बरखिलाफ़(उलटा) इसके पशु प्राणी की बलि देने और मांस भक्षण करने के कई प्रमाण मिलते हैं। हिंदू धर्म ग्रंथों में मांस भक्षण के प्रमाण देने से पहले मैं आप लोगों के सामने शास्त्रों की एक महत्वपूर्ण बात रखूंगा जिस से हमको इस विषय को समझने में आसानी होगी, जैसे **"जीवो जीवस्य जीवनम्"** अर्थात जीव जीव को खाकर ही जीव जिन्दा रहता है, दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध संत सर्वज्ञा मूर्ति ने कन्नड़ भाषा में कहा है कि

"जीवीगे जीवी तिन्दू जीवी पिड़वि जगविल्ला निर्जीवीगे जीवी तिन्दु जीवी पुड़ाविदा ना काणिल्ला सर्वज्ञा" यानी दुनिया में जान को जान खाकर जान ज़िन्दा रहते हुए मैंने देखा है बेजान को जानदार खाकर ज़िन्दा रहते हुए मैंने कभी नहीं देखा, और हम यह भी जानते हैं कि पेड़-पौदों में भी जान होती है।

अब मैं हिंदू धर्म में मांस भक्षण के कुछ उदाहरण आपके सामने रखता हूँ। उस से पहले भगवत गीता का एक श्लोक देखें और आगे बढ़ें और निष्पक्ष(Neutral) होकर पढ़ें।

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।

(भगवतगीता :- अध्याय 16, श्लोक 23)

अर्थ : जो कोई शास्त्र विधि को छोड़कर अपनी इच्छा पर चलता है, न उसको सिद्धि प्राप्त होगी न सुख और न उसकी मुक्ति होगी।

तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रान् सूकरान् महिषान् रुरून् ।
शरभान् गवयान् खड्गान् हरिणाञ्छशशल्लकान् ।।

(श्रीमद्भागवत पुराण :- अध्याय 58, स्कंद 10, श्लोक 15)

इस श्लोक मे यह बात बताई जा रही है कि श्री कृष्ण जी और अर्जुन जी ने वन में जाकर कई बाघ यानी शेर और गाय, भैंस, हिरन, खरगोश और गेंडे का शिकार किया है।

हविर्यच्चिररात्राय यच्चानन्त्याय कल्प्यते ।
पितृभ्यो विधिवद्दत्तं तत्प्रवक्ष्याम्यशेषतः ।।

(मनुस्मृति अध्याय 3, श्लोक 266)

अर्थ : अब मैं पूरी तरह से वर्णन करूंगा कि पितरों को भूमिका के अनुसार कौन सी सामग्री अर्पित करने पर वह लंबे समय तक और अनंत काल तक काम आती है।

तिलैर्व्रीहियवैर्माषैरद्भि र्मूलफलेन
दत्तेन मासं तृप्यन्ति विधिवत्पितरो ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 3, श्लोक 267)

अर्थ : काला तिल, धान्य, यव, काला उड़द, पानी, मूल (कन्द), और फल; इनको विधिपूर्वक देने से एक(1) महीने तक मनुष्यों के पितर लोग तृप्त होते हैं।

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन, त्रीन्मासान्हारिणेन तु ।

औरभ्रेणाथ चतुरः, शाकुनेनाथ पञ्च वै ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 3, श्लोक 268)

अर्थ : (पोठिया आदि) मछली के मांस से दो(2) महीनों तक, मृग(हिरन) के मांस से तीन(3) महीनों तक, भेंड़े के मांस से चार(4) महीनों तक, (द्विजातियों के भक्ष्य में गृहीत पांच) पक्षियों के मांस से पांच(5) महीनों तक (मनुष्यों के पितर तृप्त रहते हैं)।

षण्मासांश्छागमांसेन पार्षतेन च सप्त वै ।

अष्टावेनस्य मांसेन रौरवेण नवैव तु ।।

[अष्टावेणेयमांसेन पार्षतेनाथ सप्त वै ।

अष्टावैणेयमांसेन रौरवेण नवैव तु ।। 14 ।।]

(मनुस्मृति :- अध्याय 3, श्लोक 269)

अर्थ : बकरे के मांस से छः(6) महीनों तक, पृषत् नामक मृग(हिरन) के मांस से सात(7) महीनों तक, एण नामक मृग के मांस से आठ(8) महीनों तक, रुरु नामक मृगके मांस से नौ(9) महीनों तक (मनुष्यों के पितर लोग तृप्त रहते है) । [एण नामक मृग के मांस से आठ(8) महीनों तक, पृषत् नामक मृग के मांस से सात(7) महीनों तक, एणेय नामक मृग के मांस से आठ(8) महीनों तक और रुरु नामक मृग के मांस से नौ(9) महीनों तक (मनुष्यों के पितर तृप्त रहते हैं)]।

दशमासांस्तु तृप्यन्ति वराहमहिषामिषैः ।

शशकूर्मयोस्तु मांसेन मासानेकादशैव तु ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 3, श्लोक 270)

अर्थ : जंगली सूअर तथा भैंसे के मांस से दस(10) महीनों तक (मनुष्यों के *पितर)* तृप्त रहते है, खरगोश और कछुवे के मांस से ग्यारह(11) महीनों तक (मनुष्यों के *पितर* तृप्त रहते है*)।*

संवत्सरं तु गव्येन पयसा पायसेन च ।

वार्ध्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 3, श्लोक 271)

अर्थ : गाय के दूध और दूध-चावल से एक वर्ष, लंबे कान वाले सफ़ेद बकरे के मांस से उनकी संतुष्टि बारह(12) वर्षों तक बनी रहती है।

कालशाकं महाशल्काः खड्गलोहामिषं मधु।
आनन्त्यायैव कल्प्यन्ते मुन्यन्नानि च सर्वशः ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 3, श्लोक 272)

अर्थ : कलासाका(मछली) जिसे महासालका कहा जाता है, गेंडे का मांस और लाल बकरी का मांस, और जंगल में साधुओं द्वारा खाया जाने वाला सभी प्रकार का भोजन अनंत काल तक काम करता है।

यज्ञार्थ ब्रह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः ।
भृत्यानां चैव वृत्त्यर्थमगस्तयो ह्याचरत् पुरा ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 22)

अर्थ : द्विज यज्ञ के लिये तो अवश्य रक्षणीय माता-पितादिकी रक्षा के लिये शास्त्रविहित पशु पक्षियों का वध करें, ऐसा अगस्त्य ऋषिने पहले किया था।

बक्षूवुर्हि पुरोडाशा भक्ष्याणां मृगपक्षिणाम् ।
पुराणेष्वपि यज्ञेषु ब्रह्मक्षत्रसवेषु च ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 23)

अर्थ : क्योंकि पहले भी मनुष्यों तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के यज्ञों में (शास्त्रानुसार) भक्ष्य पशु पक्षियों का पुरोडाश (हविष्य-हव्य) बना था, (अतः शास्त्र विहित पशु पक्षियों का वध यज्ञ के लिये करना चाहिए)।

प्रोक्षितं भक्षयेन्मांसं ब्राह्मणानां च काम्यया ।
यथाविधि नियुक्तस्तु प्राणानामेव चात्यये ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 27)

अर्थ : मंत्र द्वारा 'प्रोक्षण' संस्कार से युक्त यज्ञ में हवन किया गया मृगादि पशु का मांस, ब्राह्मणों की इच्छा से हो तब (एक ही बार, दोबारा नहीं) शास्त्रोक्त विधि के अनुसार मधुपर्क तथा श्राद्ध में नियुक्त होने पर और प्राण-संकट (अन्य खाद्यके अभाव या रोग विशेषके) होने पर मांस को अवश्य खाना चाहिये।

प्राणस्यान्नमिदं सर्वं प्रजापतिरकल्पयत् ।

स्थावरं जंङ्गमं चैव सर्वं प्राणस्य भोजनम् ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 28)

अर्थ : प्रजापति (ब्रह्मा) ने जीव का सब कुछ खाद्य कहा है, सब स्थावर (धान्य, फल, लतादिजन्य पदार्थ) तथा जंङ्गं (पशु, पक्षी, जलचर आदि) जीव जीवों के खाद्य भक्ष्य हैं।

नात्ता दुष्यत्यदन्नाद्यान्प्राणिनो हन्यहन्यपि ।

धात्रैव सृष्टा ह्याद्याश्च प्राणिनोत्तार एव च ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 30)

अर्थ :प्रतिदिन भक्ष्य जीवों को खाने वाला भी भक्षक दोषी नहीं होता है, क्योंकि ब्रह्मा ने ही भक्ष्य तथा भक्षक--दोनों जीवों को बनाया है।

क्रीत्वा स्वयं वाप्युत्पाद्य परोपकृतमेव वा ।

देवान् पितृंश्चार्चयित्वा खादन् मांसं न दुष्यति ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 32)

अर्थ : खरीदकर, स्वयं मारकर या किसी के द्वारा दिये हुए मांस को देवता तथा पितरों के लिए समर्पण कर खाने वाला दोषी नहीं होता है।

नियुक्तस्तु यथान्यायं यो मांसं नात्ति मानवः ।

स प्रेत्य पशुतां याति संभवानेकविंशतिम् ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 35)

अर्थ : शास्त्रानुसार नियुक्त (श्राद्ध तथा मधुपर्क में) नियुक्त जो मनुष्य मांस को नहीं खाता है, वह मर कर इक्कीस(२१) जन्म तक पशु(क्रूर प्राणी) होता है।

यज्ञार्थ पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ।

यज्ञस्य भूत्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञे वधोवधः ।।

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 39)

अर्थ : ब्रह्मा ने यज्ञ के लिए पशुओं को स्वयं बनाया है और यज्ञ संपूर्ण संसार की उन्नति के लिए है, इस कारण यज्ञ में पशु का वध (वधजन्य दोष न होने से) वध नहीं है।

ओषध्यः पशवो वृक्षास्तिर्यञ्चः पक्षिणस्तथा।

यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः प्राप्नुवन्त्यत्सृतीः पुनः ॥

(मनुस्मृति :- अध्याय 5 श्लोक 40)

अर्थ : यज्ञ के लिए नाश (मृत्यु) को प्राप्त औषधियां (व्रीहि आदि), पशु (छाग आदि), वृक्ष (यज्ञस्तम्भ के लिये खदिरादि), तिर्यक् (कच्छप आदि) और पक्षी (कपिञ्जल आदि) फिर (जन्मान्तर में) उत्तम योनि को प्राप्त करते हैं|

एष्वर्थेषु पशून् हिंसन्वेदतत्त्वार्थविद्विजः।

आत्मानं च पशुं चैव गमयत्युत्तमां गतिम् ॥

(मनुस्मृति :- अध्याय 5, श्लोक 42)

अर्थ : इन कर्मों से पशुवध करता हुआ देवतत्त्व को जानने वाला द्विज अपने को तथा पशु को उत्तम गति में पहुँचाता है।

इसी प्रकार हमको पुराणों में भी पशु बलि के बहुत सारे श्लोक मिलते हैं, आइए अब हम **कूर्म पुराण** में देखते हैं कि मांस खाना चाहिए अथवा नहीं :

गोधा कूर्मः शशः श्वावित् सल्लकी चेति सत्तमाः।

भक्ष्याः पञ्चनखा नित्यं मनुराह प्रजापतिः ॥

(कूर्म पुराण :- अध्याय 17, श्लोक 34)

अर्थ : प्रजापति मनु के अनुसार स्वर्णगोधा, कछुआ, खरगोश, गेंडा और शाही जैसे पाँच नाखूनों वाले प्राणियों का मांस खाया जा सकता है।

मयूर्रान्तत्तिरञ्चैव कपिञ्जलकमेव च।

वार्ध्रीणसं द्वीपिनञ्च भक्ष्यानाह प्रजापतिः ॥

(कूर्म पुराण :- अध्याय 17 श्लोक 36)

अर्थ : मनु के अनुसार, मोर, तीतर, चातक बूढ़ा खासी, और बतख का मांस खाया जा सकता है।

राजीवान् सिंहतुण्डांश्च तथा पाठीनरोहितौ।

मत्स्येष्वेते समुद्दिष्टा भक्षणीया मुनीश्वराः ॥

(कूर्म पुराण :- अध्याय 17, श्लोक 37)

अर्थ : हे मुनीश्वरवृन्द ! मछलियों में राजीव, शकुल, पाठीन और रोहित (रोहू) मछली भक्षणीय हैं। यज्ञ में हवन के बाद, इन प्राणियों के बचे हुए मांस को खाया जा सकता है।

आमन्त्रितस्तु यः श्राद्धे दैवे वा मांसमुत्सृजेत् ।

यावन्ति पशुरोमाणि तावतो नरकान् व्रजेत् ।।

(कूर्म पुराण :- अध्याय 17, श्लोक 40)

अर्थ : जो व्यक्ति श्राद्ध में आमंत्रित होकर या धार्मिक कार्य से संलग्न होकर भी मांस नहीं खाता, वह, पशुओं के शरीर में कितने रोएँ(बाल-Hair) होते हैं, उतने वर्षों तक नरक भोगता है।

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन त्रीन्मासान् हरिणेन तु ।

औरभ्रेणाथ चतुरः शाकुनेनेह पञ्च तु ।

पण्मासांश्छागमांसेन पार्षतेनेहं सप्त वै ।

(कूर्म पुराण :- अध्याय 20, श्लोक 40)

अर्थ : मछली से श्राद्ध करने से दो महीने, हिरण के माँस से श्राद्ध करने से तीन महीने, भेड़ के माँस से चार, पक्षी के माँस से पाँच, बकरे के माँस से छः तथा पृषती (मृगविशेष) के माँस से श्राद्ध करने से सात महीने तक, पितर तृप्त रहते हैं।

अष्टावेणस्यमांसेन रौरवेण नवैव तु ।

दशमासांस्तु तृप्यन्ति वराहमहिषामिषैः ।।

शशकूर्मयोर्मांसेन मासानेकादशैव तु ।

संवत्सरन्तु गव्येन पयसा पायसेन तु ।

(कूर्म पुराण :- अध्याय 20, श्लोक 41)

अर्थ : रुरुमृग के माँस से श्राद्ध करने से नौ महीने, वराह तथा महिष के माँस से श्राद्ध करने से दस महीने और खरगोश या कछुए के माँस से श्राद्ध करने से ग्यारह महीने तक, गाय के दूध या खीर से श्राद्ध करने से पितर साल भर, तृप्त रहते हैं।

वार्ध्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ।।

(कूर्म पुराण :- अध्याय 20, श्लोक 42)

अर्थ : और गेंडे के मांस से श्राद्ध करने से बारह सालों तक तृप्त रहते हैं।

कालशाकं महाशल्कः खड्गलोहामिषं मधु।

आनन्त्यायैव कल्पन्ते मुन्यन्नानि च सर्वशः॥

(कूर्म पुराण :- अध्याय 20, श्लोक 43)

अर्थ : पटुआ या करेमू साग, बड़े-बड़े छिल्के वाली मछली, गेंडे का मांस, लाल बकरे का मांस, शहद और मुनियों के द्वारा भक्षणीय अन्न, श्राद्ध में देने से पितर सदा के लिए तृप्त हो जाते हैं।

क्रीत्वा लब्ध्वा स्वयं वाथ मृतानाहृत्य वै द्विजः।

दद्याच्छ्राद्धे प्रयत्नेन तदस्याक्षयमुच्यते॥

(कूर्म पुराण :- अध्याय 20, श्लोक 44)

अर्थ : मांस चाहे खरीदा हुआ हो, अपने आप मरे हुए पशु का हो या दान में मिला हो, श्राद्ध में अवश्य, यत्नपूर्वक मांस चढ़ाना चाहिए, इससे अक्षय फल प्राप्त होता है।

इसी प्रकार **मार्कंडेय पुराण 33** वें अध्याय के 1 से लेकर 10 तक के श्लोक देखें :

श्रतः परं शृणुष्येमं पुत्र भक्त्या यदाहृतम्।

पितॄणां प्रीतये यद्वा वन्यं वाऽप्रीतिकारकम्॥ १॥

अर्थ : हे पुत्र अब पितरों के लिये आनन्ददायक अथवा उनके लिये वर्जित जो विषय है उसको मैं कहता हूँ सुनो।

मासं पितॄणां तृप्तिश्च हविष्यान्नेन जायते।

मासद्वयं मत्स्यमांसैस्तृप्तिं यान्ति पितामहाः॥ २॥

अर्थ : हविष्यान्न को देने से पितर लोग एक महीने तक तृप्त रहते हैं तथा मछली का मांस देने से दो महीने तक तृप्त रहते हैं।

त्रीन् मासान् हारिणं मांसं विज्ञेयं पितृतृप्तये।

चतुर्मासांस्तु पुष्णाति शशस्य पिशितं पितॄन्॥ ३॥

अर्थ : पितरों की तीन महीने की तृप्ति के लिये हिरन का मांस बताया गया है तथा खरगोश का मांस उनको चार महीने तक तृप्त रखता है।

शाक्कुनं पंच वै मासान् षण्माषान् शूकरामिषम्।

छागलं सप्त वै मासानैखेयश्चाष्टमासिकीम् ॥ ४ ॥

अर्थ : पक्षियों के मांस से पांच महीने तक और सुअर के मांस से छः महीने तक तथा बकरे के मांस से सात महीने तक और बारहसिंगे के मांस से आठ महीने तक पितर लोग तृप्त रहते हैं।

करोति तृप्तिं नव वै रुरोर्मासं न संशयः ।

गवयस्यामिषं तृप्तिं करोति दशमासिकीम् ॥ ५ ॥

अर्थ : चित्राङ्ग हिरन का मांस नौ महीने तक और गवय हिरन का मांस दस महीने तक पितरों को तृप्त करता है इसमें संशय नहीं।

तथैकादशमासांस्तु उरभ्रं पितृतृप्तिदम्

संवत्सरं तथा गव्यं पयः पायसमेव वा ॥ ६ ॥

अर्थ : उरभ्र पशु के मांस से ग्यारह महीने तक और गऊ के दूध अथवा खीर से एक वर्ष तक पितर लोग तृप्त रहते हैं।

वाधी सामिषं लौह कालशाकं तथा मधु ।

दौहित्रामिषमन्यच्च यच्चान्यत् स्वकुलोद्भवैः॥ ७ ॥

अर्थ : वाघीण श्रीर लोह पक्षी का मांस, कालशाक, मधु तथा धेवते और अन्य कुटुम्बियों द्वारा लाया हुआ मांस पितरों को तृप्तदायक है।

अनन्तां वै प्रयच्छन्ति तृप्ति गौरीसुतस्तथा ।

पितृणां नात्र सन्देहो गयाश्राद्धञ्च पुत्रक ॥ ८ ॥

अर्थ : हे पुत्र ! गौरी पुत्र तथा गया का श्राद्ध पितरों को बड़ा आनन्द देने वाला है इसमें सन्देह नहीं।

श्यामाक- राजश्यामाकौ तद्वच्चैव प्रसातिकाः ।

नीवाराः पौष्कलाश्चैव धान्यानां पितृ तृप्तये ॥ ६ ॥

अर्थ : धान्यों में श्या- माक, राजश्यामाक, प्रसातिका, नीवार और पौष्कल पितरों की तृप्ति के लिये हैं।

यव-व्रीहिं-सगोधूम – तिला मुद्गाः ससर्षपाः ।

मियङ्गवः कोविदारा निष्यावाश्चातिशोभनाः ॥ १० ॥

अर्थ : जौ, गेहूँ, तिल, मूँग, सरसों, गूलर, बेर और निष्पाव यह सब उत्तम हैं।

इसी प्रकार **ब्रह्मवैवर्तपुराण** में भी हम को मांस भक्षण के प्रमाण मिलते हैं :

गवां लक्षं छेदनं च हरिणानां द्विलक्षकम् ।

चतुर्लक्षम् शशानां च कूर्माणां च तथा कुरु ।।

दशलक्षं छागलानां भेंटानां तच्चतुर्गुणम् ।

एतेषां पक्वं मांसं च भोजनार्थं च कारय ।।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्री कृष्णजन्मखंड, उत्तरार्ध. 105/61-63)

अर्थ : एक लाख गाएं(Cows), दो लाख हिरन(Deer), चार लाख खरगोश और चार लाख कछुए, दस लाख बकरे तथा उन से चौगुने भेड़ इन सब पशुओं का मांस पकवा कर भोजन तैयार करवाए।

ब्राह्मणानां त्रिकोटींश्च भोजयामास नित्यशः ।

पंचलक्षगवां मांसैः सुपक्वैर्घृतसंस्कृतैः ।

चर्व्यैश्चोष्यैर्लेह्यपेयैर्मिष्टद्रव्यैः सुदुर्लभै : ।।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखंड 54/48,49)

अर्थ : मनु यज्ञ में तीन करोड़ ब्राह्मणों को भोजन करवाया करते थे। उन्हें घी में तला और अच्छी तरह पका पांच लाख गौओं का मांस तथा दूसरे चूसने, चाटने और पीने योग्य दुर्लभ पदार्थ परोसे जाते थे।

प्रकृति खंड में महादेव सुयज्ञ नामक राजा का वर्णन करते हैं, जिसके राज्य में सुपक्व मांस ब्राह्मणों के लिए नित्य दिया जाता है :

"सुपक्वानि च मांसानि ब्राह्मणेभ्यश्च पार्वति"

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, 50/13)

और **विष्णुपुराण** में इस प्रकार कहा गया है :

हविष्यमत्स्यमांसैस्तु शशस्य नकुलस्य च ।

सौकरच्छागलैणेयरौरवैर्गवयेन च ॥ १ ॥

औरभ्रगव्यैश्च तथा मासवृद्धया पितामहाः।

प्रयान्ति तृप्तिं मांसैस्तु नित्यं वार्धीणसामिषैः ॥ २ ॥

खड्गमांसमतीवात्र कालशाकं तथा मधु ।

शस्तानि कर्मण्यत्यन्ततृप्तिदानि नरेश्वर ॥ ३ ॥

(श्री विष्णु पुराण :- अध्याय 16, श्लोक 1,2,3 Page 213)

अर्थ :- और्य बोले--हवि, मत्स्य, शशक (खरगोश), नकुल, शूकर, छाग, कस्तूरिया मृग, कृष्ण मृग, गवय (वन-गाय) और मेष के मांसों से तथा गव्य (गौ के दूध-घी आदि) से पितृगण क्रमशः एक-एक मास अधिक तृप्ति लाभ करते हैं और वार्धीणस पक्षी के मांस से सदा तृप्त रहते है ॥1-2॥ हे नरेश्वर ! श्राद्धकर्म में गेंडे का मांस कालशाक और मधु अत्यन्त प्रशस्त और अत्यन्त तृप्तिदायक है।३।

अब हम श्रीमद्वाल्मिकी रामायण में बलि या क़ुर्बानी अथवा मांस भक्षण के श्लोक देखते हैं :

श्रीमद्वाल्मिकी रामायण, हिंदी भाषा अनुवाद सहित, अयोध्याकाण्ड-3और अनुवादक चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा जी हैं इसके 22 श्लोक से लेकर 24 श्लोकों तक आप देख सकते हैं :

ऐणेयं मांसमाहृत्य शालां यक्ष्यामहे वयम् ।

कर्तव्यं वास्तुशमनं सौमित्रे चिरवासिभिः ॥

(श्रीमद्वाल्मीकि रामायण :- अयोध्याकाण्ड-3, श्लोक 22)

अर्थ : हे लक्ष्मण ! हिरन का मांस ले आओ, जिससे हम दोनों पर्ण-शालाधिष्ठात्री देवता की पूजा करें। क्योंकि यदि बहुत दिनों (किसी नवीन बने हुए घर में) रहना चाहे, तो उसे वास्तुशान्ति (गृहप्रवेश कर्म) करनी चाहिये॥ २२॥

मृगं हत्वाऽऽनय क्षिप्रं लक्ष्मणेह शुभेक्षण ।

कर्तव्यः शास्त्रदृष्टो हि विधिर्धर्ममनुस्मरः ॥ २३ ॥

अर्थ : हे लक्ष्मण ! तुम शीघ्र एक काला हिरन मार कर ले आओ। क्योंकि भली भांति विचार कर, इस विषय की धर्मशास्त्र द्वारा निर्णीत विधि को यथारीति करना उचित है॥ २३॥

भ्रातुर्वचनमाज्ञाय लक्ष्मणः परवीरहा ।

चकार स यथोक्तं च तं रामः पुनरब्रवीत् ॥ २४ ॥

अर्थ : महाबलवान लक्ष्मण जी भाई की आज्ञा के अनुसार लक्ष्मण काला मृग मार कर ले आये। फिर श्रीरामचन्द्र जी के कथनानुसार कार्य कर चुकने पर श्रीरामचन्द्रजी ने पुनः उनसे कहा॥ २४॥

ऐणेयं 'श्रपयस्वैतच्छालां यक्ष्यामहे वयम्।

स्वर सौम्य मुहूर्तोऽयं ध्रुवश्च' दिवसोऽप्ययम् ॥२५॥

अर्थ : अच्छा अब इस मांस को रांधो, जिससे हम हवन करें। हे सौम्य ! शीघ्रता करो। क्योंकि यह मुहूर्त्त भी स्थिर है और दिन भी अच्छा है॥ २५॥

स लक्ष्मणः कृष्णमृगं हृत्वा मेध्यं प्रतापवान्।

अथ चिक्षेप' सौमित्रिः समिद्धे जातवेदसि ॥ २६ ॥

अर्थ : तब प्रतापी लक्ष्मण ने मारे हुए यज्ञीय काले मृग को अच्छी तरह जलती हुई आग में डाल कर भूना॥ २६॥

तं तु पर्क समाज्ञाय निष्टतं छिन्नशोणितम्।

लक्ष्मणः पुरुषव्याघ्रमथ राघवमब्रवीत् ॥२७॥

अर्थ : और जब वह भुन गया और उसका रुधिर जल गया, तब लक्ष्मण जी ने पुरुषसिंह श्रीरामचन्द्र जी से कहा॥ २७॥

अयं कृष्णः समाप्ताङ्गः भृतः कृष्ण मृगो यथा।

देवतां देवसङ्काश यजस्व कुशलो ह्यसि ॥ २८ ॥

अर्थ : *हे देवतुल्य ! मैंने इस सम्पूर्ण अंगोंयुक्त कृष्णा मृग को रांध कर तैयार कर दिया। आप यज्ञकर्म करने में समर्थ हैं, अतः वास्तुदेवता की प्रसन्नता के लिये यज्ञ कीजिये॥ २८॥*

*और **रामायण** के श्लोक में है,*

विचराम द्विजश्रेष्ठ वनं गम्भीरमोजसा।

समाश्वस मुहूर्त तु शक्यं वस्तुमिह त्वया॥ २२॥

आगमिष्यति मे भर्ता वन्यमादाय पुष्कलम्।

रुरून्गोधान्वराहंश्र्व हत्वादयामिषान्वहून्॥ २३॥

(रामायण :- अरण्यकाण्ड, सर्ग 47, श्लोक 22-23, Page 364)

अर्थ : और अपने बलबूते पर इस भयंकर वन में विचरते हैं। द्विज-श्रेष्ठ, तुम मूहूर्त भर यहाँ ठहरो मेरे पति अनेक वन्य पदार्थों को लेकर आते होंगे। रूरु(काला हिरन), गोह(छिपकली की जाति का बड़ा जानवर) और वनैले शूकर(सूअर) को मार वे बहुत सा मांस लावेंगे ||२२||२३||

तां तथा दर्शयित्वा तु मैथिलीं गिरिनिम्नगाम्।
निषसाद गिरिप्रस्थे सीतां मांसेन च्छन्दयन्॥ १ ॥

(रामायण :- अयोध्या काण्ड, सर्ग 96, श्लोक 1, Page 928)

अर्थ : इस प्रकार श्रीरामचन्द्र जी सीता को मंदाकिनी नदी की शोभा दिखा कर, पर्वत की एक शिला पर बैठ गये और मांस का स्वाद बतला सीता को प्रसन्न करने लगे॥१॥

इदं मेध्यमिदं स्वादु निष्टप्तमिदमग्निना।
एवमास्ते स धर्मात्मा सीतया सह राघवः॥ २ ॥

(रामायण :- अयोध्या काण्ड, सर्ग 96, श्लोक 2)

अर्थ : श्रीरामचन्द्र जी ने सीता से कहा- देखो, यह मांस पवित्र है, और अग्नि में भूजने से यह स्वादिष्ट हो गया है॥२॥

तौ तत्र हत्वा चतुरो महामृगान्
वराहमृश्यं पृषतं महारुरुम्।
आदाय मेध्यं त्वरितं वुभुक्षितौ
वासाय काले ययतुर्वनस्पतिम्॥ १०२ ॥

(रामायण :- अयोध्याकाण्ड, सर्ग 52, श्लोक 102)

अर्थ :वहाँ श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण दोनों भाइयों ने ऋष्य(एक प्रकार का हिरन), पृषत(सफ़ेद धब्बे वाला हिरन), वराह(सूअर) और रुरु(काला हिरन) जाति के चार बड़े बड़े वनैले जानवरों की शिकार खेली। तदनन्तर उन लोगों ने भूख लगने पर ऋष्योचित भोजन कन्दमूल फलादि ला कर खाये और जब सन्ध्या हुई तब एक वृक्ष के नीचे जा टिके ॥ १०२ ॥

और **महाभारत** अनुशासन पर्व श्लोक 1 से 10 देखें

किंस्पिदन्तं पितृभ्यो वै भवत्यक्षवमीश्वर।

किं हषिश्चिरराम्राय किमानन्त्याय कल्पते॥ १॥

अर्थ : युधिष्ठिर बोले - हे पितामह ! पितरों के उद्देश्य से कौन वस्तु दान करने पर अक्षय होती है ? किस वस्तु के दान से सदा के लिये तथा किसके दान से अनन्त काल तक तृप्त रहते हैं ?॥ १॥

हवींषि श्राद्धकल्पे तु यानि श्राद्धविदो विदुः।

लानि मे शृणु काम्यानि फलं चैषां युधिष्ठिर॥ २॥

अर्थ : भीष्म बोले हे युधिष्ठिर ! श्राद्धवित् पण्डित लोग श्राद्धकल्प में जिसे हविरूपी जानते हैं, उन काम्यविषयों तथा उनके फल मेरे समीप सुनो॥ २॥

तिलैव्रीहियवैम्राषैरद्धिर्मूलफलैस्तथा।

दत्तेन मासं प्रीयन्ते श्राद्धेन पितरो नृप॥ ३॥

अर्थ : हे राजन् ! तिल, व्रीहि, यव, उडद, जल और फलमूल के द्वारा श्राद्ध करने से पिवरगण एक महीने तक प्रसन्न हुआ करते हैं॥ ३॥

वर्धमानतिलं श्राद्धक्षयं मनुरब्रवीत्।

सर्वेष्वेव तु भोज्येषु तिलाः प्राधान्यतः स्मृताः॥ ४॥

अर्थ :मनु ने कहा है कि जिस श्राद्ध में तिल का प्रमाण अधिक रहता है, वह श्राद्ध अक्षय होता है। श्राद्ध के समस्त भोजन की वस्तुओं के बीच तिल सब से मुख्य कहा गया है॥ ४॥

द्वौ मासी तु भवेत्तृप्तिर्मत्स्यैः पितृगणस्य छ।

श्रीन्मासानाविकेनाहुयातुर्मास्यं शशेन तु॥ ५॥

अर्थ : मत्स्य(मछली) के द्वारा श्राद्ध करने से पितरगण दो महीने तक तृप्त रहते हैं। मेंढे के मांस से श्राद्ध करने पर तीन महीने तक और शश(खरगोश) के मांस से पितरगण चार महीने तक प्रसन्न हुआ करते हैं॥ ५॥

आजेन मासान्प्रीयन्ते पश्चैष पितरो नृप।

वाराहेण तु षण्मासान्सप्त वै शाकुनेन तु॥ ६॥

अर्थ : हे राजन् ! बकरे के मांस से श्राद्ध करने से पितर लोग पांच महीने तक प्रसन्न रहते हैं।

वराह के मांस से श्राद्ध करने पर पितरगण छः महीने तक और शाकुनसांस से श्राद्ध करने से सात महीने- तक तृप्त रहते हैं॥ ६ ॥

मासानष्टौ पार्यलेन रौरथेण नचैव तु ।

गवयस्य तु लांसेन तृप्तिः स्याद्दशनासिकी ॥ ७ ॥

अर्थ : चित्रमृग के मांस से श्राद्ध करने पर आठ महीने और कृष्णवार मृग के मांस से श्राद्ध करे तो पितरगण प्रसन्न हो के नौ महीने तक निवास करते हैं, गवय(Cow) मांस से श्राद्ध करने पर पितरों को दस महीने की तृप्ति होती है॥७॥

मालानेकादश प्रीतिः पितॄणां माहिषेण तु ।

गव्येन पते श्राद्धे तु संवत्सरमिहोच्यते ॥ ८ ॥

अर्थ :भैंसे के मांस से श्राद्ध करने पर पितरों को ग्यारह महीने की तृप्ति हुआ करती है। ऐसा वर्णित है, कि गाय के दही के द्वारा श्राद्ध करने से पितरों की एक वर्ष तक तृप्ति होती है॥ ८ ॥

यथा गव्यं तथा युक्तं पायसं लर्पिषा सह ।

वाघ्रीणसस्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ ९ ॥

अर्थ : जैसा गाय के दही का फल है, घृत सहित पायस भी वैसा ही उपयोगी हैं महोक्ष, पक्षि विशेष वा चकरा विशेष के मांस के द्वारा पितरों को बारह वर्ष की तृप्ति होती है ॥ ९ ॥

आनन्त्याय भवेद्दत्तं खड्गमांसं पितृक्षये ।

फालशाकं च लौहं चाप्यानन्त्वं छाग उच्यते ॥ १० ॥

अर्थ : पितृयज्ञ में खड्गमांस दिये जाने पर आनन्त्य की हेतु हुआ करता है। कालशाक, काञ्चन वृक्ष के पुष्प आदि और बकरे आनन्त्य रूप से वर्णित होते हैं॥ १०॥

और लिखा है कि एक दिन राजा रंतिदेव के बहुत से मेहमान आ गए, अतः उस ने 20,100 गौएं क़त्ल कीं।

सांकृते रंतिदेवस्य यां रात्रिमवसन् गृहे ।

आलभ्यंत शतं गवां सहस्राणि चैक विंशतिः ॥

(महाभारत : शांतिपर्व, 29/179)

"गव्येन दत्तं श्राद्धे तु संवत्सरमिहोच्यते"

(महाभारत : अनुशासन पर्व, 88/5)

अर्थ : गौ के मांस से श्राद्ध करने पर पितरों की एक साल के लिए तृप्ति होती है।

अब आपको कुछ संदर्भ बताते हैं :

महाभारत में रंतिदेव नामक एक राजा का वर्णन मिलता है, जो गो-मांस परोसने के कारण यशस्वी बना। महाभारत, वन पर्व (अ. 208 अथवा (अ. 199) में आता है कि :

राज्ञो महानसे पूर्व रन्तिदेवस्य वै द्विज

द्वे सहस्रे तु वध्येते पशूनामन्वहं तदा

अहन्यहनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा

समांसं ददतो ह्यन्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः

अतुला कीर्तिरभवन्नृप्स्य द्विजसत्तम

(महाभारत, वनपर्व 208 199/ 8-10)

अर्थ : राजा रंतिदेव की रसोई के लिए दो हज़ार पशु काटे जाते थे। प्रतिदिन दो हज़ार गौएं(Cows) काटी जाती थीं। मांस सहित अन्न का दान करने के कारण राजा रंतिदेव की अतुलनीय कीर्ति हुई।

इस वर्णन को पढ़ कर कोई भी व्यक्ति समझ सकता है कि गो मांस दान करने से यदि राजा रंतिदेव की कीर्ति फैली तो इस का अर्थ है कि तब गो-वध सराहनीय कार्य था, न कि आज की तरह निंदनीय, रंतिदेव का उल्लेख महाभारत में अन्यत्र भी आता है। शांति पर्व, अध्याय 29, श्लोक 123 में आता है कि राजा रंतिदेव ने गौओं की जो खालें उतारीं, उन से रक्त चू चू कर एक महानदी बह निकली थी। वह नदी चर्मण्वती (चंबल) कहलाई।

पुरा किल राज्ञो रंतिदेवस्य गवालंभेष्वेकत्र संभृताद् रक्तनिष्यंदाच्चर्मराशेः

काचिन्नदी सा सस्यन्दे चर्मण्वतीत्याख्यायत इति ।।

अर्थ : प्राचीन काल में राजा रंतिदेव ने गौओं का आलंभ (क़त्ल) किया। उस के परिणाम स्वरूप इकट्ठी हुई खालों से रक्त का प्रवाह नदी की तरह बहने लगा। वह रक्त की नदी चर्म (खालों) से बही थी, अतः "चर्मण्वती" कहलाई।

चर्मराशेरूत्क्लेदात् संसृजे यतः

ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्याता सामहानदी

कुछ लोग इस सीधे सादे श्लोक का अर्थ बदलने से भी बाज नहीं आते। वे इस का अर्थ यह कहते हैं कि चर्मण्वती नदी जीवित गौओं के चमड़े पर दान के समय छिड़के गए पानी की बूंदों से बह निकली। इस कपोलकल्पित अर्थ को शायद कोई स्वीकार कर ही लेता, यदि कालिदास का **"मेघदूत"** नामक प्रसिद्ध खंडकाव्य पास न होता। **"मेघदूत"** में कालिदास ने एक जगह लिखा है :

व्यालबेथाः सुरभितनयालम्भजा मानयिष्यन्

स्रोतोमूर्त्यां भुवि परिणतां रंतिदेवस्य कीर्तिम

यह पद्य पूर्वमेघ में आता है, विभिन्न संस्करणों में इसकी संख्या 45 या 48 या 49 है। इस का अर्थ है : हे मेघ, तुम गौओं के आलंभन (क़त्ल) से धरती पर नदी के रूप में बह निकली राजा रंतिदेव की कीर्ति पर अवश्य झुकना। अन्यत्र भी कहा है कि गौगव्येन दत्तं श्राद्धे तु संवत्सरमिहोच्यते अनुशासन पर्व, 88/5 अर्थात गौ के मांस से श्राद्ध करने पर पितरों की एक साल के लिए तृप्ति होती है।

पंडित पांडुरंग वामन काणे ने लिखा है : "ऐसा नहीं था कि वैदिक समय में गौ पवित्र नहीं थी। उसकी पवित्रता के ही कारण वाजसनेयी संहिता (अर्थात यजुर्वेद) में यह व्यवस्था दी गई है कि गोमांस खाना चाहिए" धर्मशास्त्र विचार, मराठी, पृ. 180) उष्ट्रवर्जिता एकतो दतो गोव्यजमृगा भक्ष्याः' मनुस्मृति 5/18 मेधातिथि भाष्य, अर्थात ऊंट को छोड़कर एक ओर दांवालों में गाय, भेड़, बकरी और मृग भक्ष्य अर्थात खाने योग्य है।

सिर्फ साम्प्रदायिकता फैलाने के लिए अब गाय का इस्तेमाल करने वाले ये जर्मन और युरेशियन आर्यन लोग आज अपनी मां को तो पूछते नहीं, मानव को मानव नहीं समझते, मगर गाय को माता कहकर ढिंढोरा पीटते हैं।

और हम यह भी जानते हैं कि अपने निर्वासन के दौरान पांडवों ने भी खुद को मांस पर निर्भर रखा था।

सबसे पुराने हिंदू पवित्र ग्रंथों में से एक - ऋग्वेद (1500 ईसा पूर्व) में इस बात के लिखित प्रमाण हैं कि उस समय गाय का मांस खाया जाता था, क्योंकि इनमें से कई जानवरों - घोड़े, भैंस, मेढ़े और बकरियों की भी बलि दी जाती थी और उनका मांस खाया जाता था।

याज्ञवल्क्य कहते हैं, "मैं इसे (बीफ) तभी खाता हूँ जब यह नरम होने तक पकाया जाता है"। भादुड़ी याद दिलाते हैं कि देवताओं के राजा इंद्र को भी बीफ का शौकीन माना जाता है। ऋग्वेद में, इंद्र मांग करते हैं कि उन्हें 15 से 20 पके हुए बैल परोसे जाएं।

और **ऋग्वेद** में इस प्रकार लिखा हुआ है :

उक्ष्णो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम् ।

उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पीणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।।

(ऋग्वेद :- मंडल 10, सूक्त 86, मंत्र 14)

अर्थ :- 15 की संख्या फिर इसके बाद वह मेरे लिए कई बैल पकाते हैं और मैं तमाम चर्बी यानी चिकनाई खा जाता हूं इससे मेरा पेट भर जाता है इंद्र सबसे महान है।

मित्र कूवो यक्षसने न् गावः पृथिव्या ।

आपृगामृया शयंते ॥

(ऋग्वेद :- मण्डल 10, सूक्त 89, मंत्र 14)

अर्थ :- हे ! इन्द्र जैसे गौ वध के स्थान पर गाये काटी जाती है वैसे ही तुम्हारे इस अस्त्र से मित्र द्वेषी राक्षस कटकर सदैव के लिए सो जांए।

यहाँ ध्यान दें कि गोवध की बात कही गयी है।

आद्रीणाते मंदिन इन्द्र तूयान्स्सुन्बंती ।

सोमान पिवसित्व मेषा ॥

पचन्ति ते वषमां अत्सी तेषां ।

पृक्षेण यन्मधवन हूय मान : ।।

(ऋग्वेद :- मण्डल 10, सूक्त 28, मंत्र 3)

अर्थ : हे ! इन्द्र अन्न की कामना से तूम्हारे लिए जिस समय हवन किया जाता है उस समय यजमान पत्थर के टुकडों पर शीघ्रताशीघ्र सोमरस (शराब) तैयार करते हैं उसे तुम पीते हो, यजमान बैल पकाते हैं और उसे तुम खाते हो।

यहाँ ध्यान दीजिये की केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि इन्द्र भगवन भी गौमांस भक्षण करते हैं।

अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णष्व पीवसा मेदसा च।
नेत्त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हृषाणो दधृग्विधक्ष्यन्पर्यङ्खयाते॥

(ऋग्वेद :- मण्डल 10, सूक्त 16, मंत्र 7)

अर्थ :- ढाल बनेगा यह मांस आग के शोलों के विरुद्ध चर्बी(Fat) और गुद यानी मग़ज़(Marrow) तुम्हें लिपेट लेगा ताकि अगर कोई दिलेर या बेताब तुम पर ताक़त से आक्रमण करे तो वह नाकाम होगा और न तुम पर विजय प्राप्त कर सकेगा।

वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे।
घसत्त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥

(ऋग्वेद :- मंडल 10, सूक्त 86, मंत्र 13)

अर्थ :- दौलतमंद वर्षकपायि जो अता किया गया बेटों से और बेटों के मुहाफ़िज़ों से इंद्र तेरे बैलों को खा जाएगा तुम्हारी नेक तमन्नाई बहुत असर आवर होती है इंद्र बड़ा महान है।

इसी प्रकार हम **यजुर्वेद** में देखते हैं :

वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थनिहितान्पराके।
मेदसः कुल्या उप तान्स्रवन्तु सत्या एषामाशिषः सन्नमन्तां स्वाहा॥

(यजुर्वेद 35/20)

अर्थ : हे जातवेद, पितरों के लिए तुम गाय के चर्म विशेष को ले जाओ। तुम दूर स्थित पितरों को जानते हो। उस चर्म विशेष से निकलने वाली मज्जा (चरबी) की नदियां पितरों की ओर बहें और उन के लिए दान करने वालों की सब कामनाएं पूरी हों।

अथर्ववेद जिसको संपादित एवं संशोधित करने वाले के.एल. जोशी जी है और इस वेद का अंग्रेज़ी अनुवाद करने वाले W.D. वैट्नी और सयानाचार्य जी हैं जिसको परिमल पब्लिकेशन(Parimal Publication) द्वारा 2000 ई. में दिल्ली शहर में प्रकाशित किया गया है, अथर्ववेद : काण्ड 10, सूक्त 9, मंत्र 1 के शीर्षक(Heading) में यह लिखा हुआ है "With the Offering of a Cow and a Hundred Rice dishes"।

अघायतामपि नह्या मुखानि सपत्नेषु वज्रमर्पयैतम्।
इन्द्रेण दत्ता प्रथमा शतौदना भ्रातृव्यघ्नी यजमानस्य गातुः॥

(अथर्ववेद :- काण्ड 10, सूक्त 9, मंत्र 1)

"बलि या भेंट देना एक गाय(Cow) और सौ(100) चावल के व्यंजनों (Dishes) के साथ"।

और बृहदारण्यक उपनिषद में इस प्रकार लिखा हुआ है :

अथ य इच्छेत्पुत्रो मे पण्डितो विगीतः समितिंगमः शुश्रूषितां वाचं भाषिता जायेत, सर्वान्वेदाननुब्रुषीत, सर्व मायुरियादिति, मांसौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाताम् ; ईश्वरौ जनयितवे- औक्षेण वार्षभेण वा॥ १८॥

(बृहदारण्यक उपनिषद :- श्लोक 18, Translated by Swami Madhavananda)

अर्थ : जो चाहता हो कि उसको एक ऐसा बेटा पैदा हो, जो प्रख्यात पंडित हो और विद्वानों की सभाओं में मधुर सुखद वाणी बोलने वाला हो, संपूर्ण वेदों का पाठ करने वाला हो, और उसकी आयु लंबी हो, तो उस पुरुष को चाहिए कि वह किसी शक्तिशाली बैल के मांस को, जो चावल के साथ पका हुआ हो, खाए उसको और उसकी पत्नी को चाहिए कि इस भोजन को घी लगाकर खाए, इस प्रकार वह ऐसे बेटे को जन्म देने में समर्थ हो सकते हैं।

और **व्यास स्मृति** अध्याय 3 में बताया गया है कि ईसाल सवाब के आय्याम यानी श्राद्ध और क़ुर्बानी के कार्य में निमंत्रित किया जाने वाला ब्राह्मण अगर मांस ना खाए तो वह धर्म विधि के अनुसार भ्रष्ट हो जाता है और **वसिष्ठ स्मृति** अध्याय 12 में यह बात बताई गई है कि ईसाल सवाब के अय्याम मस्लन बर्सी, चहलुम, स्वयं वग़ैरा और क़ुर्बानी की तक़रीब यानी श्राद्ध में निमंत्रित किया जाने वाला ब्राह्मण अगर मांस ना खाए तो कुर्बान किए हुए जानवर के जिस्म के बाल बराबर वर्षों तक वह नरक में जलता रहेगा।

और **आपस्तम्ब धर्म-गृह्य सूत्र** (APASTAMBA Dharma & Grihya Sutras, Translated by various Scholars, Edited by Sri Rama Ramanuja Achari, Page 199, Patala 1, Section 3,) आपस्तम्ब गृह्य पटाला 1, भाग 3 के सूत्रों में क़ुर्बानी के बारे में ऐसा लिखा है :

सूत्र 1) मघा नक्षत्र के अनुसार गाय(Cow) दी जाती है।

सूत्र 5) विवाह के समय एक गाय दी जाए।

सूत्र 6) घर के लिए एक गाय दी जाए।

सूत्र 7) पहली गाय से उसे चाहिए कि अर्घ्य दावत करे दूल्हे के लिए एक अतिथि के तौर पर।

सूत्र 8) दूसरी से दूल्हे को चाहिए कि वह दावत करे उसके लिए जिसकी वह इज़्ज़त करता है।

सूत्र 9) यह मौक़े(Occasions) हैं गाय की क़ुर्बानी के लिए अतिथि की आमद पर अष्टका क़ुर्बानी दे अपने पूर्वजों को और शादी पर।

आपस्तम्ब धर्म-गृह्य :- प्रस्ना **2,** पटाला **7,** खांड **16,** Page 164,165**, सूत्र 23-28** में लिखा है :

सूत्र 23) इस प्रकार की क़ुर्बानियों के समय जिन पदार्थों का दान किया जाता है वे यह हैं तिल, मांस, चावल, जौ, पानी, जड़ें और फल।

सूत्र 24) परंतु पशुओं की चर्बी से बना हुआ भोजन दान दिया जाए तो पूर्वजों की आत्मा अधिक समय तक संतुष्ट रहती है।

सूत्र 25**)** इसी प्रकार अगर धन नियम के अनुसार कमाया जाए तो उसे ग़रीब लोगों को दें।

सूत्र 26) गाय के मांस से पूर्वजों की आत्मा १ साल तक संतुष्ट रहती है।

सूत्र 27) भैंस के मांस से पितर उससे ज़्यादा समय तक तृप्त रहते हैं।

सूत्र 28) इस अनुमति के साथ के भैंस के मांस का प्रयोग किया जा सकता है यह घोषणा कर दी गई है कि पालतू और जंगली जानवरों का मांस क़ुर्बानी के लिए दिया जा सकता है।

आपस्तम्ब धर्म-गृह्य सूत्र :- पटाला 7, भाग 20, Page 219 में लिखा है :

सूत्र 10) वह अपनी गायों को आग के आस पास रखता है ताकि क़ुर्बानी का धुआँ उन्हें पहुँच सके।

सूत्र 12) उसे छत्रपति के लिए क़ुर्बानी करनी चाहिए बिना आग से जिस रास्ते में उसके गाय थे।

आपस्तम्ब धर्म गृह्य पटाला **8** भाग **22** मे लिखा है :

सूत्र 3) अगले दिन वह स्पष्ट करेगा गाय को दरभा की तलवार से इन शब्दों के साथ मैं छूता हूँ तुझे ताकि पितर राज़ी हों।

सूत्र 4) पाँच अज्य का चढ़ावा खामोशी से पेश करके और गाय के पेट की थैली पकाने के बाद और अज्य के तहत उसे फैलाने और छिड़कने का अमल हो।

सूत्र 5) वह उबले हुए चावल के साथ गाय के मांस का चढ़ावा पेश करेगा अगले मंत्र के साथ।

सूत्र 11) बचा कुचा गाय का मांस जो पास हो जितना जरूरी हो उतना अष्टका के एक दिन बाद वह अन्वष्टका की रसम अंजाम दें।

इसी प्रकार **आपस्तम्ब धर्म गृह्य** में हम देखते हैं कि :

संवत्सरं गव्येन प्रीतिः भूयांसमतो माहिषेण ।

एतेन ग्राम्यारण्यानां पशूनां मांसं मेध्यं व्याख्यातम् ।।

खड्गोपस्तरणे खड्गमांसेनानन्त्यं कालम् ।

तथा शतबलेर्मत्स्यस्य मांसेन वाध्रीणसस्य च ।।

(आ. ध. सू. 2/7/16/25 एवं 2/7/17/3)

अर्थ : श्राद्ध में गोमांस खिलाने से पितर एक वर्ष के लिए संतुष्ट हो जाते हैं। भैंस का मांस खिलाने से वे उस से भी ज्यादा समय के लिए संतुष्ट होते हैं। यही नियम खरगोश आदि जंगली पशुओं और बकरी आदि ग्रामीण पशुओं के मांस के विषय में है। यदि गैंडे के चर्म पर ब्राह्मणों को बैठा कर गैंडे का ही मांस खिलाया जाए तो पितर अनंत काल के लिए संतुष्ट हो जाते हैं। यही बात "शतबलि" नामक मछली के मांस के विषय में है।

आपस्तम्ब धर्म गृह्य :- पटाला **3**, भाग **8**, Page 205 में लिखा है :

सूत्र 25) गाय की कुर्बानी जो अतिथि की आमद पर हो लाज़मी(अवश्य) है।

इसी प्रकार पहले सूत्र में और **70** वें खांड मे यह बात बताई गई है कि गाय और बैल का मांस खाना जरूरी है और आपस्तम्ब गृह्य खांड **3** में यह बताया गया कि मेहमान की दावत के वक्त क़ुर्बानी के लिए और ईसाल सवाब यानी श्राद्ध के लिए गायों को ज़ुबाह(बलि) करना चाहिए और आपस्तम्ब गृह्य सूत्र **2** मे यह बात बताई गई है कि अय्याम ईसाल सवाब यानी श्राद्ध के मौक़े पर गाय का मांस खाने से खाने वाले के फ़ौत शुदा बुज़ुर्ग यानी पितर **1** साल तक संतुष्ट रहते हैं।

और **गरुड़ पुराण** में यह बात बताई गई है कि श्राद्ध के मौक़े पर मुक़्तलिफ़(विभिन्न) खानों को मुक़्तलिफ़ सूरतों में खिलाने पिलाने से पितर संतुष्ट होते हैं और बर्सी या पुण्यतिथि के समय अगर ब्राह्मणों को दूध पिलाए तो फ़ौत शुदा बुज़ुर्ग(पितर)

1 महीने तक संतुष्ट रहते हैं और मछलियों से **2** महीने तक और हिरन के मांस से **3** महीने तक, बकरी के गोश्त से **4** महीने तक, पक्षियों के मांस से **5** महीने तक, और बकरे के मांस से **6** महीने तक, सांबर के मांस से **7** महीने तक और जंगली गाय या बैल के मांस से **8** महीने तक और बारहसिंघा के मांस से **9** महीने तक और जंगली सूअर के मांस से **10** महीने तक और खरगोश के मांस से **11** महीने तक पितर संतुष्ट रहते हैं।

और **मत्स्यपुराण** के **16** वें अध्याय में यह बात बताई गई है कि ईसाल सवाब यानी श्राद्ध के मौक़े(Occasion) पर मछली और हिरन का मांस मेहमानों के खिलाने की वजह से मुतवफ्फि बुजुर्ग यानी पितर बेशुमार(अंगिनत) वर्षो तक संतुष्ट रहते हैं।

अग्नि पुराण के **30** से **32** श्लोकों तक गरुड़ पुराण और कूर्म पुराण की तरह ही बयान किया गया है मगर थोड़े से अंतर के साथ जैसा कि "जो व्यक्ति गया जाकर वहाँ ईसाल सवाब में गेंडे का मांस ब्राह्मणों को खिलाएगा उस व्यक्ति के पितर बेहिसाब सालों तक शांत रहते हैं"।

वायु पुराण के **21** वें अध्याय में मत्स्य पुराण ही की तरह बतलाया गया है मगर वहाँ मज़ीद यूँ आया है ईसाल सवाब(श्राद्ध) के मौक़ों पर मेहमानों को गेंडे का मांस खिलाने से **12** साल और जंगली हिरन, काला बकरा और गाय के मांस से भी मुतवफ्फि बुजुर्ग(पितर) बेहिसाब सालों तक संतुष्ट रहते हैं।

और **विष्णु पुराण** में 16 वें अध्याय मे यह बात बताई गई है कि गेंडे का मांस मेहमान को खिलाने से पितर संतुष्ट रहते हैं।

और **मार्कंडेय पुराण 32** वें अध्याय में यह बात हमको मिलती है कि ईसाल सवाब के दिनों में लांबे लांबे सींगो वाले गेंडे का गोश्त ब्राह्मणों को खिलाने से पितर सूर्य चंद्र जब तक रहेंगे तब तक संतुष्ट रहते हैं।

इसके अतिरिक्त हम प्राचीन काल के अवतार ऋषि मुनीयों के जीवन चरित्र से भी यह बात जान सकते हैं।

जैसे **शिव पुराण** अध्याय **63** में है कि गारगे ऋषि और उनके शिष्यों ने श्राद्ध के समय गाय ज़ुबाह(बलि) कर के खा चुके हैं।

यही विषय **मत्स्य पुराण** के **20** वें अध्याय में भी दर्ज है।

और **शांति पर्व महाभारत अध्याय 29** में यह बात बताई जा रही है कि सारंग

देवराज ने एक दिन बेहिसाब जानवरों को कुर्बान करवाया इनके खून से शहर की नालियों में लाल पानी लबालब बहता रहा।

और **महाभारत वन पर्व** के अध्याय **207** में यह बात बताई गई कि महाराजा वदंती के बावरचीखाने(Kitchen) में हर रोज **2000** बैल और **2000** गाय क़ुर्बान(Sacrifice) की जाती थीं।

और **वाल्मीकि पुराण** अयोध्या खांड में इस बात का वर्णन है कि सीता जी राम जी के साथ वनवास के लिए दक्षिण रवाना हुईं उस समय गंगा के किनारे आकर उन्होंने कहा था कि

संवस्तदेवी नरामीत्वाम पारियानमि पतिर्वर्ताम ।

यहे त्याम गो सहस्त्रेण सुरा घठ शतेनच ।।

(वाल्मिकी पुराण :- अयोध्या खांड, श्लोक 5)

(सीता देवी ने कहा) ऐ ! गंगा इस वनवास से जब हम सही सलामत(सुरक्षित) वापस होंगे तो 1000 गायों को क़ुर्बान(Sacrifice) करके तेरे किनारे दावत करूंगी।

और यजुर्वेद के अध्याय 24 में संपूर्ण रूप से बलि या क़ुर्बानी के विषय में शिक्षा दी गई है और इसी प्रकार **यजुर्वेद** के **24** वें अध्याय के नोट में भी यह बात नज़र आती है और प्राचीन काल के पुराणों से भी, अलावा इसके **वशिष्ठ मुनि, विश्वामित्र** आदि ऋषियों से भी यह चीज़ अमलन(Practical) साबित है। इसके लिए ज़माने हाल के बड़े-बड़े लोगों के अक़वाल(वचन) भी हैं जैसे पेपर केसरी पत्र जो पुणे से निकलता है तारीख **13** दिसंबर **1904** मे यह बात बताई गई है कि बरोड़ा सम्मेलन(Conference) में **लोकमान्य तिलक** ने यूँ कहा था कि **2000** साल पहले हिंदू अपने धर्म के अनुसार जानवरों को बलि देकर मांस खाया करते थे इनके खून से नदियों का पानी लाल बहता था और स्मृति वर्त प्रभाकर प्रकाश्य सरस्वती भंडार, काशी के पृष्ठ संख्या 57 पर पंडित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी जी ने कहा है कि **"कौन कहता है कि यज्ञ में जानवरों की क़ुर्बानी और मांस भक्षण नहीं है इसीलिए जैनी और बुद्धि, सनातनियों से अलग हो गए"**।

और **उत्तराम चरित्र** में यह बात बताई गई है कि वालमीकि ऋषि ने जब वशिष्ठ

मुनि की दावत(Feast) की तो दो बैल ज़ुबाह किए भारत के इतिहास को जानने वाले कई विद्वानों(Scholars) ने यह साबित(Proof) किया है कि भारत के प्राचीन काल में मांस भक्षण करने का रिवाज बहुत था मगर जिस काल से बुद्धि(Buddhist) और जैनियों(Jain) का दौर शुरू हुआ **अहिंसा परमो धर्मः** के नारे ने वैदिक संस्कृति रखने वालों को अपने धर्म शास्त्रों में मांस भक्षण का अर्थ बदलने पर मजबूर कर दिया।

The Myth of Holy Cow (पवित्र गाय का मिथक) नाम की किताब लिखने वाले प्रख्यात इतिहासकार **D. N. Jha** के अनुसार यह धारणा बिल्कुल ग़लत है कि हिन्दू कभी गो(Cow) मांस नहीं खाते थे, उनके मुताबिक़ वैदिक काल में न सिर्फ़ गाय और बैल की बलि दी जाती थी बल्कि ख़ास मौक़ों(Special Occasions) पर गो मांस खाया भी जाता था। और **D. N. Jha** जी कहते हैं कि वैदिक काल में अश्वमेध आदि यज्ञों के मौक़े पर गाय को मारा जाता था और वह कहते हैं कि बहुत सारे धर्म शास्त्रों में लिखा है कि लोग जब उनके घर प्रतिष्ठित मेहमान आते थे जैसे घर का दामाद, समधी या राजा तो उनके लिए **"गाय"** मारा जाता था इसको **'मधुपर्क'** कहते हैं और इसकी चर्चा कई धर्म शास्त्रों में है।

भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माताओं में से एक **डॉक्टर बी. आर. अंबेडकर** अच्छे शोधकर्ता भी थे। उन्होंने गोमांस खाने के संबंध में एक निबंध लिखा था, **"क्या हिंदुओं ने कभी गोमांस नहीं खाया ?"** यह निबंध उनकी किताब, **"अछूतः कौन थे और वे अछूत क्यों बने ?"** में है।

अपने इस लेख में अंबेडकर हिंदुओं के इस दावे को चुनौती देते हैं कि हिंदुओं ने कभी गोमांस नहीं खाया और गाय को हमेशा पवित्र माना है। और उसे अघन्य (जिसे मारा नहीं जा सकता) की श्रेणी में रखा है।

अंबेडकर ने प्राचीन काल में हिंदुओं के गोमांस खाने की बात को साबित करने के लिए हिन्दू और बौद्ध धर्मग्रंथों का सहारा लिया। उनके मुताबिक, "गाय को पवित्र माने जाने से पहले गाय को मारा जाता था"। उन्होंने हिन्दू धर्मशास्त्रों के विख्यात विद्वान पी. वी. काणे का हवाला दिया। काणे ने लिखा है, "ऐसा नहीं है कि वैदिक काल में गाय पवित्र नहीं थी, लेकिन उसकी पवित्रता के कारण ही बाजसनेई संहिता में कहा गया कि गोमांस को खाया जाना चाहिए।"(मराठी में धर्म शास्त्र विचार, पृष्ठ 180)

अंबेडकर ने लिखा है, ऋगवेद काल के आर्य खाने के लिए गाय को मारा करते थे, जो खुद ऋगवेद से ही स्पष्ट है।

ऋगवेद (10:86:14) में इंद्र कहते है, "उन्होंने एक बार ५ से ज्यादा बैल पकाए"

ऋगवेद (10:91:14) कहता है कि "अग्नि के लिए घोडे, बैल साह, बांझ गायों और भेड़ों की बलि दी गई"।

ऋगवेद (10:72:6) से ऐसा लगता है कि गाय को तलवार या कुल्हाड़ी से मारा जाता था"।

अंबेडकर ने वैदिक ऋचाओं का हवाला दिया है जिनमे बलि देने के लिए गाय और सांड में से चुनने को कहा गया है। अंबेडकर ने लिखा "तैत्रीय ब्रह्मण में बताई गई कामयेष्टियों में न सिर्फ बैल और गाय की बलि का उल्लेख है बल्कि यह भी बताया गया है कि किस देवता को किस तरह के बैल या गाय की बलि दी जानी चाहिए"। वह लिखते हैं, "विष्णु को बलि चढ़ाने के लिए बौना बैल, वृत्रासुर के संहारक के रूप में इंद्र को लटकते सींग वाले और माथे पर चमक वाले सांड, पुशन के लिए काली गाय, रुद्र के लिए लाल गाय आदि"।

"**तैत्रीय ब्रह्मण** में एक और बलि का उल्लेख है जिसे पंचस्रदीय-सेवा बताया गया है। इसका सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, पांच साल के बगैर कूबड़ वाले 17 बौने बैलों का बलिदान और जितनी चाहें उतनी तीन साल की बौनी बछियों का बलिदान"। अंबेडकर ने जिन वैदिक ग्रंथों का उल्लेख किया है उनके अनुसार मधुपर्क नाम का एक व्यंजन इन लोगों को अवश्य दिया जाना चाहिए (1) ऋत्विज या बलि देने वाले ब्राह्मण (2) आचार्य शिक्षक (3) दूल्हे (4) राजा (5) स्नातक और (6) मेज़बान को प्रिय कोई भी व्यक्ति। कुछ लोग इस सूची में अतिथि को भी जोड़ते हैं।

मधुपर्क में "मांस, और वह भी गाय का मांस होता था। मेहमानों के लिए गाय को मारा जाना इस हद तक बढ़ गया था कि मेहमानों को **"गोघ्न"** कहा जाने लगा था, जिसका अर्थ है गाय का हत्यारा"।

"सब खाते थे गोमांस"

इस शोध के आधार पर अंबेडकर ने लिखा कि एक समय हिंदू गायों को मारा करते थे और गौमांस खाया करते थे जो बौद्ध सूत्रों में दिए गए यज्ञ के ब्यौरों(Details) से साफ़ है। संयुक्त निकाय में लिखा है, "पांच सौ सांड, पांच सौ बछड़े और कई बछियों बकरियों और भेड़ों को बलि के लिए खंभे की ओर ले जाया गया"। अंत में अंबेडकर

लिखते हैं, "इस सुबूत के साथ कोई संदेह नहीं कर सकता कि एक समय ऐसा था जब हिंदू, जिनमें ब्राह्मण और ग़ैर ब्राह्मण दोनों थे, न सिर्फ मांस बल्कि गोमांस भी खाते थे।

हिन्दू धर्म को अमेरिकी धर्म संसद तक लेजाने वाले **स्वामी विवेकानन्द** ने साल उन्नीस सौ(1900) में कैलिफ़ोर्निया(California) में दिये एक भाषण(Lecture) में भी कुछ ऐसा ही ज़िक्र किया, विवेकानन्द के मुताबिक़ **"पुरानी रीति रिवाजों के मुताबिक़ जो बीफ़(Beef) नहीं खाता था वो अच्छा हिंदू नहीं था"।**

The Complete Works of Swami Vivekananda (8 Volume Set) Published by Advaita Ashrama, Page 174, इस पुस्तक के तीसरे भाग(Volume 3) में स्वामी विवेकानन्दा जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि "भारत में एक समय ऐसा भी था जब कोई भी ब्राह्मण गोमांस खाए बिना ब्राह्मण नहीं रह पाता था, आप ने वेदों में पढ़ा है कि जब एक संन्यासी, एक राजा या एक महान व्यक्ति किसी घर में आता था, तो सब से अच्छे बैल को मार दिया जाता था; समय के साथ यह पाया गया कि चूंकि हम एक कृषि जाति थे, इसलिए सबसे अच्छे बैलों को मारने का मतलब नस्ल(Breed) का विनाश था। इसलिए यह प्रथा बंद कर दी गई और गाय की हत्या के खिलाफ आवाज उठाई गई"।

इसी पुस्तक के Page 556 पर स्वामी विवेकानन्दा जी कहते हैं कि "आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे यदि मैं आपसे कहूँ कि पुराने रीतियों के अनुसार, वह अच्छा हिंदू नहीं है जो गोमांस नहीं खाता। कुछ अवसरों पर उसे एक बैल की बलि देनी पड़ती है और उसे खाना पड़ता है जो अब घृणित है"।

वैदिक युग में गोमांसाहार की विद्यमानता के कारण ही स्वामी विवेकानंद ने उसे **"स्वर्णयुग"** कहा था। स्वामी विवेकानंदजी के जीवनीकार स्वामी निखिलानंद ने लिखा है : स्वामी विवेकानंद ने पुराणपंथी ब्राह्मणों को उत्साहपूर्वक बतलाया कि वैदिक युग में गोमांसाहार प्रचलित था। जब एक दिन उन से पूछा गया कि भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कौनसा काल था तो उन्होंने कहा कि वैदिक काल स्वर्णयुग था, जब **"पांच ब्राह्मण एक गाय चट कर जाते थे"**। (देखें, स्वामी निखिलानंद कृत 'विवेकानंद ए बायोग्राफी.' पृष्ठ 936)।

श्री मुकंदीलाल ने अपनी पुस्तक **"काओ स्लाटर हार्न्स आफ ए डाइलेमा"** के पृष्ठ 18 पर लिखा है: "प्राचीन भारत में समारोहों में गौओं को मारना शुभ माना जाता था। दूल्हा और दुलहन वेदि के सामने लाल बैल की कच्ची खाल पर बैठते थे। वह खाल उस अवसर पर मारे गए बैल की ही होती होगी, जिसे उस अवसर पर खाने के लिए मारा जाता था। ऐसे ही राज्याभिषेक के समय भावी राजा को लाल बैल की खाल पर बैठाया जाता था"।

इसी प्रकार **ISKCON** के पंडित बिमला प्रसाद दास जी कहते हैं कि "एक भक्त ने मुझ से सवाल किया था कि क्या राम चंद्र जी ने मांस खाया है ?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पंडित बिमला प्रसाद दास जी कहते हैं कि "वैदिक शास्त्रों से हम यह मालूम कर सकते हैं कि क्षत्रियों को कुछ ऐसे ख़ास मौक़ों पर मांस खाने की इजाज़त थी क्योंकि वह अपना जुझारूपन(Fighting Spirit) बरक़रार रख सकें" । पंडित बिमला प्रसाद दास जी के कहने का तात्पर्य यही था कि श्री राम चंद्र जी ने मांस खाया क्योंकि वह क्षत्रिय थे।

विनायक दामोदर सावरकर द्वारा मराठी भाषा में लिखी गई किताब **"विज्ञाननिष्ठ निबंध"** जिसको स्वातंत्र्यवीर सावरकर राष्ट्रय स्मारक प्रकाशन, मुंबई ने प्रकाशित की थी, इस किताब के अध्याय 1.5 का शीर्षक है – **"गोपालन हवे, गोपूजन नव्हे"** हिन्दी में इसका अनुवाद होगा – गाय की देखभाल करिये, लेकिन पूजा नहीं। इस पुस्तक में विनायक दामोदर सावरकर लिखते हैं "जो लोग भी गाय को माता मानते हैं वे स्वयं को मानव जाति से हीन कर लेते हैं उस से एक दर्जा नीचे उतर जाते हैं"... "गाय एक पशु है जो पूरी तरह से बुद्धि हीन है उसमें इतना विवेक नहीं है कि वह अपने ही मल में लोटी रहती है यानी अपने गोबर में..." "और जो मुगल आक्रांताओं के समय पराजय हुई है वह इसलिए हुई है कि गायों की रक्षा में लगे रहने वाले लोग उस युद्ध कौशल को भूल गए थे" और वीर सावरकर लिखते हैं "देश को बचाने की ज़रूरत के समय, किसी दुर्ग या क़िले की रक्षा के समय अगर गाय का बलिदान देना अनिवार्य हो, ज़रूरी हो तो दे देना चाहिए, सेना के पास अगर खाने के लिए कुछ ना हो तो गाय को मार कर खाया जा सकता है"।

III) अब हम इस विषय का तीसरा यानी आखरी प्रश्न जो सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है इसको हल करते हैं क्या बात है कि केवल गाय की बलि पर ही भारत वासियों में गुस्सा छा जाता है हिंसा पाप है, इंसान शाकाहारी है मांसाहारी नहीं, इस तरह के विषयों के चरचों की धूम होती है हालांकि गाय के अलावा(Moreover) कई प्रकार के पशु प्राणी को खाने

वाले लोग भी भारत में मौजूद हैं इस पर किसी भी धर्म गुरु को ग़ुस्सा आता हुआ नहीं देखने को मिलता, इसका जवाब इस तरह है कि मानव समाज में हम देखते हैं किसी भी मानव के अंदर कोई भी पशु का गुण अधिक नज़र आए तो तुरंत ही हम उस व्यक्ति को उस पशु के नाम से पुकारते हैं जैसे वीरता से लड़ने पर शेर कहते हैं, मूर्खता पर गधा, सुरीली आवाज पर कोयल, बोझ ढ़ोने पर बैल, इसी तरह हर वक्त नरमी और प्रेम से मिलने झुलने वाले इंसान को गाय कह देते हैं, इसको "गुण प्रधानी" कहते हैं। यही कारण बना कि इतने सारे धर्म ग्रंथों के आधार और प्रकृति के सिद्धांत देकर समझाने के बावजूद भारत के लोग गाय की भक्ति और प्रेम में डूबे हुए नज़र आते हैं। हम लोगों को गाय के आध्यात्मिक तथ्यों को जानना ज़रूरी है, भारत के लोग आध्यात्मिक और तत्वज्ञान के प्रेमी होने के कारण बहुत सी बातों को आध्यात्मिक रूप से बयान करते हैं इसलिए गाय को भी बहुत सी जगहों पर आध्यात्मिक रूप से पेश(प्रस्तुत) किया है। वेद, उपनिषद जैसे धर्म ग्रंथों को भी **"गाय"** कहा गया है और ऋषि-मुनियों-अवतारों और साधू-सत्पुरुषों को भी **"गाय"** कहा गया है जैसा कि गीता शुरू होने से पहले एक श्लोक आता है जिसमें श्री कृष्ण जी कहते हैं **"सर्वोपनिषदो गावो दुग्धा गोपालनन्दन:"** इसमें श्री कृष्ण जी कहते हैं कि "सारे उपनिषद गाय हैं और मैं दूध निकालने वाला गोपाल हूँ"। इसका मतलब यहाँ साफ है गाय जानवर नहीं बल्कि उपनिषद को **"गाय"** कहा गया है, इसी तरह महाभारत में कृष्ण जी के सोलह हज़ार(**16,000**) बीवियों को गोपियों के रूप में बतलाया गया है वह गाय या बीवियाँ नहीं थीं बल्कि वह सब कृष्ण जी के भक्त थे। इसी प्रकार **अथर्ववेद खांड 20 सूक्त 127 मंत्र 3** में मामहे ऋषि को दस हज़ार(**10,000**) गायें देने का वर्णन है जो वास्तव में मक्का शहर पर आक्रमण करते समय पैग़ंबर मुहम्मद(स.) के अनुयायियों(Disciples) की संख्या थी, इन दस हज़ार अनुयायों को वेद के मंत्र में **"गाय"** कहा गया है और इसी तरह इस्लाम के तत्वज्ञान में भी यह आस्था पाई जाती है, क़ुरआन करीम के सूरह यूसुफ़ में आया है कि "एक बादशा स्वप्न(Dream) में देखता है कि सात(7) दुबली गायें सात मोटी गायों को खा रही हैं" इसकी ताबीर यानी मतलब यूसुफ(अ.स) ने ये बताया कि वह सात गायें धरती हैं 7 साल तक अनाज खूब पिकेगा यह मोटी गायों के बराबर हैं और 7 साल दुष्ट काल होगा यानी सूखा(Drought) होगा यह दुबली गायों के बराबर है, यहाँ धरती को गाय के रूप में बताया गया है और हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ ने जंग-ए-ओहद से पहले एक ख्वाब देखा आप ﷺ ने फर्माया कि मैंने ख्वाब में गाय ज़ुबह होते हुए देखा हूँ, इससे

मुराद जंग-ए-ओहद में शहीद होने वाले आप ﷺ के अनुयायी थे, यह बात सही बुखारी हदीस नंबर **4,081** मे हमको मिलती है, यहाँ गाय को आप ﷺ के अनुयायी से तुलना दी गई है। इन वाक़ियात को देखने के बाद पता चलता है कि जिस गाय को भगवान या देवता के रूप में बताया जाता है वह यह गाय नहीं है जिसके लिए आज लोग आपस में लड़ रहे हैं वह आध्यात्मिक गाय है यानी वह वेद, पुराण, शास्त्र, गीता, कुरआन है या ऋषि, मुनि, अवतार, पैग़ंबर और साधु सत्पुरुष हैं, जिनका एहतेराम करना सम्मान करना हर इंसान के लिए ज़रूरी है।

इन तीन प्रश्नों को हल करने के बाद अब मैं आपके सामने कुछ कड़वे सच को उजागर करना चाहता हूँ **दिव्य क़ुरआन** में सूरह हज आयत 28 में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह फ़रमाता है "ऐ ईमानवालो ! तुम क़ुर्बान करने वाले पशुओं पर अल्लाह का नाम पढ़ो और उनका मांस खाओ, ग़रीबों और पुण्यवान लोगों को भी खिलाकर खुश करो", फिर इसी सुरह हज आयत34-36 में फ़रमाता है "ऐ ईमानवालो ! केवल तुम्हारे लिए क़ुर्बानी का नियम नहीं है बल्कि तुम से पहले क़ौमों(जाति) को भी यही आदेश दिये गए हैं। हम तुमको जो पशु दिये हैं उन पर अल्लाह का नाम पढ़ो और अपने लिये क़ुर्बान करो। तुम्हारे लिए ऊँटों को भी एक निशान बनाया है, जब तुम उनको कुर्बान(Sacrifice) करते हो तो अल्लाह के नाम ही से ज़ुबह किया करो, जब वो एक ओर गिर पड़ें तो उनका मांस खाओ उसमें तुम्हारे लिए फ़ायदा है। उनका मांस लालच न रखने वाले और पुण्यवान लोगों को खिलाओ इस प्रकार इन पशुओं को हमने तुम्हारे लिए ताबे यानी आधीन कर दिया है"। यही बात तमाम पिछले धर्मों में सम्मिलित (Common) है, वेदिक ऋषि, अवतार, धार्मिक राजा क़ुर्बानी या बलि करके मांस खाते रहे हैं इसके लिए हिन्दू धर्म में भी अंगिनत प्रमाण मिलते हैं।

इस दिव्य क़ुरआन के वचन के अनुसार हम हर क़ौम(जाति) में क़ुर्बानी देखते हैं, यह ब्राह्मण क़ौम जो इस समय मांस से बहुत परहेज़ करती है, इन ब्राह्मण क़ौम के सिद्धांतों में पहला सिद्धांत **"यजन"** और **"याजन"** है अर्थात क़ुर्बानी है, आज कल इस विषय में उलझनें बढ़ती जारही है, ऐसे समय हमारा कर्तव्य है कि खासतौर से हिन्दू भाईयों को इनके सिद्धांत समझाएँ। परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने चाहा तो हमारी यह किताब हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए जादू का काम करेगी। हम जानते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम नफ़रत का सामान वास्तव में गाय की क़ुर्बानी है। इस दुश्मनी को पैदा करने के दो कारण हैं पहला

कारण यह कि जब से मुसलमान भारत में आने लगे तब से भारत के राजनीतिक हिन्दू नेता(Political Hindu Leaders) हिन्दुओं के दिमाग़ में गाय की पवित्रता जमाने लगे, यूँ तो पवित्रता इस से भी कुछ साल पहले ख़ास-ख़ास समुदायों में बे बुनियाद तौर पर थी, जब देखा की इसी एक मुद्दे से मुसलमानों के मुक़ाबले की एक जमाअत(गिरोह) तैयार हो सकती है तो दिन ब दिन इसमें जान डालना शुरू किया, इस प्रकार क़ौम के विचारों को परवान चढ़ाते रहे, जब मुग़ल-साम्राज्य कमज़ोर हो गया तो कुछ दुष्ट हिन्दुओं ने इस मुद्दे को कामयाबी का हत्यार बनाया और कई बार राजनीतिक संगठनों(Political Parties) ने इस से नाजायज़ फ़ायदा उठाया और नाहक़ इंसानों का खून किया और आज कल इसी एक बात पर ज़ोर दिया जारहा है और दिन ब दिन गाय की पवित्रता बढ़ रही है। ऐसे मौक़े पर हर समझदार आदमी का कर्तव्य है कि इस राज़ को फ़ाश कर दे, वह यह कि सामान्य हिन्दू भाईयों को हर मुमकिन ज़रिये से ज़ाहिर करदे कि गाय की पवित्रता इनका कोई धार्मिक सिद्धांत नहीं है यह बीच में आई हुई चीज़ है। इस प्रकार हिन्दू भाईयों को राजनीति(Political) मैदान से निकाल कर धार्मिक मैदान में लाए। इस काम को करने का पहला कर्तव्य मुसलमानों का है क्योंकि पहली ज़िम्मेदारी इनकी यह है कि गाय की पवित्रता से पैग़ंबर मुहम्मद(स) पर हमला होता है क्योंकि पैग़ंबर मुहम्मद(स) ने गाय की क़ुर्बानी की है और दुसरी बात यह है कि इन मुसलमानों की ख़ामोशी से कुछ दुष्ट हिन्दू नाजायज़ तौर पर इसी ज़रिये से लोगों को संगठित कर रहे हैं। अपने क़्याल में वे एक दिन मुसलमानों को गाय की दुम पकड़ के भारत से बाहर निकाल देने पर तुले हुए हैं। इस शैतानी हरकत को अल्लाह वाले, ऋषि, मूनी, सूफ़ी, संत खूब जानते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हर तरह से हिन्दू भाईयों को बताया जाए कि गाय की क़ुर्बानी हिन्दुओं का धार्मिक कर्तव्य है और मांस भक्षण हमारे हिन्दू भाईयों की धार्मिक पहचान है। एक मुसलमान बिना मांस खाए भी अच्छा मुसलमान रह सकता है तरंतु कोई यह कहे कि मांस खाना धर्म के विरुद्ध है तो हम को इनके धर्म ग्रंथों से ही मांस भक्षण के प्रमाण देना अनिवार्य हो जाता है।

ऐ हिन्दू भाईयों ! हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए गाय को क़ुर्बान करदो उसी तरह क़ुर्बान करो जिस तरह वाल्मीकि जी ने ऋषियों की दावत(Feast) में क़ुर्बान किया था या इस तरह क़ुर्बान करो जिस तरह एकता के लिए मनु जी ने नर्मदा नदी पर पाँच लाख गायों को क़ुर्बान किया था, या इस तरह क़ुर्बान करो जिस तरह सीता जी ने आफ़ात से बचने के

लिए एक हज़ार गायों को गंगा के किनारे पर क़ुर्बान किया था, या इसी तरह क़ुर्बान करो जब यज्ञ का समय आया तो श्री कृष्ण जी ने गाय क़ुर्बान की थी, या इसी तरह क़ुर्बान करो जिस तरह अबुल अंबिया(अवतारों के पिता) इब्राहीम(अ.स.)(Prophet Abraham) ने अपने महमानों के लिए एक बछड़ा क़ुर्बान किया था, या इसी तरह क़ुर्बान करो जिस तरह मूसा(अ.स.)(Prophet Moses) ने मूर्ति पूजा को समाप्त करने के लिए पवित्र गाय की क़ुर्बानी की थी, या इसी तरह क़ुर्बान करो जिस तरह दोस्तों के लिए पैग़ंबर मुहम्मद(स.) ने एक गाय की क़ुर्बानी की थी।

चूंकि मुसलमानों के पास संपूर्ण कभी न बदलने वाला क़ानून है और मुमकिन नहीं कि कोई मुसलमान क़ुरआन के इस दिव्य क़ानून के ख़िलाफ़ क़दम मार कर एक दिन के लिए भी कामियाब रह सके। इस समय मुसलमानों के हाथ में बिल्कुल वही क़ानून है जो चौदह सौ साल पहले था। दुनिया में सिवाय इस मुसलमान क़ौम के दूसरी कोई और क़ौम नहीं है जिसके क़ानून असली हालत में बाक़ी रहे हों, इस वजह से मुसलमान गाय के मुद्दे आदि में अपने पैग़ंबर मुहम्मद(स.) के आचरण को एक दिन के लिए भी छोड़ नहीं सकते, हालांकि दूसरे धर्मों ने ज़माने के असर में आकर अपने अवतारों और ऋषि, मूनियों के आचरण को छोड़ दिया, न केवल छोड़ दिया बल्कि अपने अवतारों, ऋषि, मूनियों के आचरण के विरुद्ध किया। क़ुरआन-ए-करीम में पैग़ंबर मूसा(अ.स.) द्वारा अल्लाह का आदेश है की إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ अर्थात "निस्संदेह परमात्मा परमेश्वर अल्लाह आदेश देता है कि तुम गाय क़ुर्बान करो" इस दिव्य क़ुरआन सूरह बक़रह आयत 67 की व्याख्या पैग़ंबर मुहम्मद(स.) का आचरण और वचन है, आचरण यह है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स.) ने एक समय गाय क़ुर्बान कर के दोस्तों की दावत की थी और हदीस(वचन) यह है कि हर सात मुसलमानों में एक गाय की क़ुर्बानी होनी चाहिए। ऐसी स्थिति में कोई मुसलमान मुमकिन नहीं कि इस आचरण को छोड़े, वह जानता है कि पैग़ंबर मुहम्मद(स.) के हर आचरण में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की आज्ञा है। भारत में आज से छः सौ साल(600) पहले एक संगठन ने गौरक्षा पर ज़ोर दिया, और इधर जैसे-जैसे मुसलमान दुनियावी ताक़तों में कमज़ोर होते गए, वैसे वैसे ये दंगा करवाने वाला मुद्दा ताक़त पकड़ता गया। इस प्रकार इन मक्कारों ने इसी मुद्दे के द्वारा मुसलमानों की आर्थिक स्थिति को बरबाद कर दिया, क़ौमों में दुश्मनी डाल दी, इस्लाम को

ज़लील करने लग गए। इस्लाम के प्रचार प्रसार में एक ज़बरदस्त दीवार आड़े आगई, वह क़ौम जो ऐसी मांस भक्षक के सूअर तक नहीं छोड़ती उन्होंने केवल एक गाय के मुद्दे की वजह से हम से लेन देन छोड़ दिया, छूत-छात शुरू की और इन मक्कारों ने इस गुप्त इंक़िलाब से हिन्दू भाईयों के दिलों में केवल गाय की क़ुर्बानी से नफ़रत ही नहीं पैदा करदी बल्कि गाय की क़ुर्बानी के मौक़ों पर बेहद ग़ुस्सा पैदा कर दिया। हम जानते हैं कि एक ज़माने की नाजायज़ कोशिश ने सामान्य हिन्दू भाईयों की आंखों पर पट्टी बांधी है तो ऐसे समय प्रत्येक इंसान का कर्तव्य है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए यह नाजायज़ इंक़िलाब को दूर करने के लिए जी जान से कोशिश करे और यह भी कोशिश करे कि इन चालाक लोगों की चालाकी को दुनिया के सामने प्रकट किया जाए और हिन्दू भाईयों को सनातन धर्म पर लाया जाए और इन हिन्दू भाईयों को धार्मिक स्वाभिमान दिलाया जाए और इनको इनके अवतारों और ऋषियों से मुहब्बत पैदा कर दी जाए और इनको यह समझा दिया जाए कि ऐ धोका खाने वाले हिन्दू भाईयों ! ग़ौर करो जब तुम गाय की क़ुर्बानी(बलि) करने वाले लोगों से नफ़रत कर रहे हो तो वास्तव में तुम श्री राम जी और सीता देवी से नफ़रत कर रहे हो क्योंकि उन्होंने गंगा नदी पर एक हज़ार(1000) गायें(Cows) क़ुर्बान(Sacrifice) किए थे (वाल्मीकि पूराण पढ़ कर देखो) और तुम वास्तव में मनु जी जो धर्म शास्त्र के अवतार हैं उनसे नफ़रत कर रहे हो क्योंकि उन्होंने नर्मदा नदी पर पाँच लाख गायें क़ुर्बान किये थे (देखो ब्रह्मवैवर्त पुराण) और ये नफ़रत मुसलमानों से नहीं कर रहे हो बल्कि तुम वास्तव में श्री कृष्ण जी भगवान और अर्जुन जी से कर रहे हो क्योंकि इन दोनों ने एक समय यज्ञ के वक़्त गाय क़ुर्बान की थी (देखो भागवत पुराण) और तुम फिर नफ़रत मुसलमानों से नहीं कर रहे हो बल्कि वाल्मीकि ऋषि और वशिष्ठ मुनि से नफ़रत कर रहे हो क्योंकि वाल्मीकि आश्रम में गायों को काट कर खाते थे (देखो उत्तररामचरितम्) संक्षिप्त में कहें तो वेदों या पुराणों और शास्त्रों का वह कौनसा ऋषि है जिसने मांस नहीं खाया। परमात्मा परमेश्वर अल्लाह के पास वो लोग जवाबदार हैं जो एक नजायज़ जज़्बा मासूम हिन्दुओं में गौ रक्षा का पैदा कर के अब तक हज़ारों इन्सानों का क़ून करवाया और जगतगुरू-कल्कि अवतार-नराशंस-पैग़ंबर मुहम्मद(स.) के आचरण को गिरी हुई नज़र से देखा और इस्लाम को ज़लील किया और मुसलमानों का दिल दुखाया, मैं हैरान हूँ कि दुनिया ने अब तक ऐसे दुष्टों के लिए क़ानून क्यों न बनाया।

क्या आप जानते हैं, ब्राह्मण शाकाहारी क्यों बने ?

एक समय था, जब ब्राह्मण सब से अधिक गोमांसाहारी थे। कर्मकांड के उस युग में शायद ही कोई दिन ऐसा होता हो, जब किसी यज्ञ के निमित्त गो वध न होता हो, और जिसमें कोई अब्राह्मण किसी ब्राह्मण को न बुलाता हो। ब्राह्मण के लिए हर दिन गोमांसाहार का दिन था। अपनी गोमांसा लालसा को छिपाने के लिए उसे गूढ़ बनाने का प्रयत्न किया जाता था। इस रहस्यमय ठाठ-बाट की कुछ जानकारी ऐतरेय ब्राह्मण में देखी जा सकती है। इस प्रकार के यज्ञ में भाग लेने वाले पुरोहितों की संख्या कुल सत्रह(17) होती, और वे स्वाभाविक तौर पर मृत पशु की पूरी की पूरी लाश अपने लिए ही ले लेना चाहते। तो यजमान के घर के सभी सदस्यों से अपेक्षित होता कि वे यज्ञ की एक विधि के अंतर्गत पशु के मांस पर से अपना अधिकार छोड़ दें।

ऐतरेय ब्राह्मण में जो कुछ कहा गया है, उस से दो बातें असंदिग्ध तौर पर स्पष्ट होती हैं। एक तो यह कि बलि के पशु का सारा मांस ब्राह्मण ही ले लेते थे। और दूसरी यह कि पशुओं का वध करने के लिए ब्राह्मण स्वयं कसाई का काम करते थे। तब फिर इस प्रकार के कसाई, गोमांसाहारियों ने पैंतरा क्यों बदला ? हम जानते हैं कि अशोक ने कभी गोहत्या के ख़िलाफ कोई क़ानून नहीं बनाया और यदि बनाया भी होता तो ब्राह्मण समुदाय एक बौद्ध सम्राट के क़ानून को क्यों मानते ? तो क्या मनु ने गोहत्या का निषेध किया था ? तो क्या मनु ने कोई क़ानून बनाया ? मनुस्मृति के अध्याय 5 में खान पान के विषय में श्लोक मिलते हैं...

"बिना जीव को कष्ट पहुंचाये मांस प्राप्त नहीं किया जा सकता और प्राणियों के वध करने से स्वर्ग नहीं मिलता, तो मनुष्य को चाहिए कि मांसाहार छोड़ दे"। (मनुस्मृति 5:48)

तो क्या इसी को मांसाहार के विरुद्ध निषेधाज्ञा माना जाए ? मुझे ऐसा मानने में परेशानी है और मैं समझता हूँ कि ये श्लोक ब्राह्मणों के शाकाहारी बन जाने के बाद में जोड़े गये अंश हैं। क्योंकि मनुस्मृति के उसी अध्याय 5 के इस श्लोक के पहले करीब बीस पच्चीस श्लोकों में विवरण है कि मांसाहार कैसे किया जाए, उदाहरण स्वरूप...

● प्रजापति ने इस जगत को इस प्राण के अन्न रूप में बनाया है, सभी चराचर (जड़ व जीव) इस प्राण का भोजन हैं। (मनुस्मृति 5:28)

● मांस खाने, मद्यपान तथा मैथुन में कोई दोष नहीं। यह प्राणियों का स्वभाव है, पर उस से परहेज में महाफल है। (मनुस्मृति 5:56)

● ब्राह्मणों द्वारा मंत्रों से पवित्र किया हुआ मांस खाना चाहिए और प्राणों का संकत होने पर अवश्य खाना चाहिए। (मनुस्मृति 5:27)

● ब्रह्मा ने पशुओं को यज्ञों में बलि के लिए रचा है इसलिए यज्ञों में पशु वध को वध नहीं कहा जाता। (मनुस्मृति 5:39)

● एक बार तय हो जाने पर जो मनुष्य (श्राद्ध आदि अवसर पर) मांसाहार नहीं करता, वह इक्कीस जन्मों तक पशु योनि में जाता है। (मनुस्मृति 5:35)

स्पष्ट है कि मनु ने मांसाहार का निषेध नहीं किया और गोहत्या का भी कहीं निषेध नहीं किया।

मनु के विधान में पाप कर्म दो प्रकार के हैं...

1) **महापातक :** ब्रह्म हत्या, मद्यपान, चोरी, गुरुपत्नीगमन ये चार अपराध महापातक हैं और

2) **उपपातक :** परस्त्रीगमन, स्वयं को बेचना, गुरु, मां, बाप की उपेक्षा, पवित्र अग्नि का त्याग, पुत्र के पोषण से इंकार, दूषित मनुष्य से यज्ञ कराना और गोवध।

स्पष्ट है कि मनु की दृष्टि में गोवध मामूली अपराध था और तभी निंदनीय था, जब गोवध बिना उचित और पर्याप्त कारण के हो। याज्ञवल्क्य ने भी ऐसा ही कहा है। तो फिर आज के जैसी स्थिति कैसे पैदा हुई ? कुछ लोग कहेंगे कि ये गो पूजा उसी अद्वैत दर्शन का परिणाम है, जिसकी शिक्षा है कि समस्त विश्व में ब्रह्म व्याप्त है। मगर यह संतोषजनक नहीं है। जो वेदांतसूत्र ब्रह्म के एकत्व की बात करते हैं, वे यज्ञ के लिए पशु हत्या को वर्जित नहीं करते (2.1.28)। और अगर ऐसा है भी, तो यह आचरण सिर्फ गो तक सीमित क्यों ? सभी पशुओं पर क्यों नहीं लागू होता ? मेरे विचार से ये ब्राह्मणों के चातुर्य का एक अंग है कि वे गोमांसाहारी न रहकर गो पूजक बन गये। इस रहस्य का मूल बौद्ध ब्राह्मण संघर्ष में छिपा है। उनके बीच तू डाल डाल, मैं पात पात की होड़ भारतीय इतिहास की निर्णायक घटना है। दुर्भाग्य से इतिहासकारों ने इसे ज्यादा महत्व नहीं दिया है। वे आम तौर पर इस तथ्य से अपरिचित होते हैं कि लगभग 400 साल तक बौद्ध और ब्राह्मण एक दूसरे से बाजी मार ले जाने के लिए संघर्ष करते रहे। एक समय था, जब अधिकांश भारतवासी बौद्ध थे और बौद्ध धर्म ने ब्राह्मणवाद पर ऐसे आक्रमण किये जो पहले किसी ने नहीं किये। बौद्ध धर्म के विस्तार

के कारण ब्राह्मणों का प्रभुत्व न दरबार में रहा, न जनता में। वे इस पराजय से पीड़ित थे और अपनी प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने के प्रयत्नशील थे।

इसका एक ही उपाय था कि वे बौद्धों के जीवनदर्शन को अपनाए और उनसे भी चार क़दम आगे बढ़ जाएँ। बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद बौद्धों ने बुद्ध की मूर्तियाँ और स्तूप बनाने शुरू किये। ब्राह्मणों ने उनका अनुकरण उन्होंने शिव, विष्णु, राम, कृष्ण, आदि की मूर्तियाँ स्थापित करके उनके मंदिर बनाए। मक़सद इतना ही था कि बुद्ध मूर्तिपूजा से प्रभावित जनता को अपनी ओर आकर्षित करें। जिन मंदिरों और मूर्तियों का हिंदू धर्म में कोई स्थान न था उनके लिए स्थान बना। गोवध के बारे में बौद्धों की आपत्ति का जनता पर प्रभाव पड़ने के दो कारण थे। एक तो वे लोग कृषि प्रधान थे और दूसरे गो बहुत उपयोगी थे। और उसी वजह से ब्राह्मण गोघातक समझे जाने के चलते घृणा के पात्र बन गए थे। मांसाहार छोड़कर ब्राह्मणों का उद्देश्य बौद्ध भिक्षुओं से उनकी श्रेष्ठता छीन लेना ही था और बिना शाकाहारी बने वह पुनः उस स्थान को प्राप्त नहीं कर सकता था, जो बौद्धों के आने के बाद उसके पैर के नीचे से खिसक गया था। इसीलिए ब्राह्मण, बौद्ध भिक्षुओं से भी एक कदम आगे जाकर शाकाहारी बन गए। यह एक कुटिल चाल थी क्योंकि बौद्ध शाकाहारी नहीं थे हो सकता है कि ये जानकर कुछ लोग आश्चर्य करें, पर यह सच है। बौद्ध त्रिकोटी परिशुद्ध मांस खा सकते थे। यानी ऐसे पशु को जिसे उनके लिए मारा गया ऐसा देखा न हो, सुना न हो और न ही कोई अन्य संदेह हो। इसके अलावा वे दो अन्य प्रकार का मांस और खा सकते थे। ऐसे पशु का जिसकी स्वाभाविक मृत्यु हुई हो, या जिसे किसी वन्य पशु पक्षी ने मार दिया हो। इस प्रकार के शुद्ध किये हुए मांस खाने वाले बौद्धों से मुक़ाबले के लिए मांसहारी ब्राह्मणों का मांस छोड़ने की क्या अवश्यक्ता थी ? थी, क्योंकि वे जनता की दृष्टि में बौद्धों के साथ एक समान तल पर खड़े नहीं होना चाहते थे, यह अति को प्रचंड से पराजित करने की नीति है। यह वह युद्धनीति है, जिसका उपयोग वामपंथियों को हटाने के लिए सभी दक्षिणपंथी करते हैं।

एक और प्रमाण है कि उन्होंने ऐसा बौद्धों को परास्त करने के लिए ही किया। यह वह स्थिति बनी जब गोवध महापातक बन गया। भंडाकर जी लिखते हैं कि, हमारे पास एक ताम्र पात्र है जोकि गुप्त राजवंश के स्कंदगुप्त के राज्यकाल का है। यह एक दान पात्र है जिसके अंतिम श्लोक में लिखा है "जो भी इस प्रदत्तदान में हस्तक्षेप करेगा वह गो हत्या, गुरू हत्या या ब्राह्मण हत्या जैसे पाप का भागी होगा"। हमने ऊपर देखा है कि मनु ने गोवध

को उपपातक माना है। मगर स्कंद गुप्त के काल (412 ई.) आते-आते महापातक बन गया। हमारा विश्लेषण है कि बौद्ध भिक्षुओं पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए ब्राह्मणों के लिए यह अनिवार्य हो गया था कि वे वैदिक धर्म के एक अंश से अपना पीछा छुड़ालें। यह एक साधन था जिसे ब्राह्मणों ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पाने के लिए उपयोग किया।

अंत में मैं आपको यह बात बताना चाहूँगा कि कुछ लोग क़ुर्बानी का बिल्कुल इंकार करते हैं और वेद को भी मानते हैं तो वेद के बताए हुए छः(6) कर्म यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान, प्रतिग्रह में **"यजन"** के क्या माने करेंगे और इस **"यजन"** का कार्य(Practice) कुछ ब्राह्मणों और तमाम क्षत्रियों में जिसका रिवाज है इस पर किस तरह पर्दा डालेंगे और यजुर्वेद की क़ुर्बानियों को कहाँ छुपाएँगे और यजुर्वेद का अर्थ है "क़ुर्बानी का वेद" यह वास्तव में यज वेद है, संस्कृत में (र) दो शब्दों को मिलाने के लिए आता है इस तरह यज वेद, यजुर्वेद हुआ। इस हक़ीक़त पर आर्य क़ौम पर्दा डालना चाहती है यानी क्षत्रिय वर्ण का नाश करना चाहती है।

इस्लाम के सिद्धांतों या क़ानून के खिलाफ़ जो व्यक्ति क़लम(Pen) उठाता है या तो वह पागल है या मक्कार। पागल और मक्कार कामियाब नहीं हो सकते। इस्लाम सारी दुनिया के इंसानों को सुधारने के लिए आया है और वह भारत या किसी देश की चार दिवारी तक सीमित क़ानून वाला नहीं है, इस्लाम अंतराष्ट्रीय धर्म(International Religion) है। कुछ लोग अपने धर्म को (जो केवल वेद का ही धर्म है) तमाम दुनिया में फैलाना चाहते हैं और साथ ही मांस भक्षण के ख़िलाफ़ हैं। केवल कुछ ब्राह्मणों के जो भारत के मध्य भाग में रहते हैं और कुछ जैनियों के जो भारत के विशेष भाग में आबाद हैं और दक्षिण भारत के कुछ लिंगायतों के, तमाम दुनिया के लोग मांसहारी हैं। इस प्रकार वह धर्म जो मांस भक्षण का दुश्मन है वह दुनिया में सफ़ल नहीं हो सकता, अगर हम देखें तो मानव को छोड़कर दुनिया में दो प्रकार के जीव पाये जाते हैं एक मांसहारी और एक शाकाहारी। कोई भी इस का इंकार नहीं कर सकता के इन दो प्रकार के जीवों को परमात्मा परमेश्वर अल्लाह ने नहीं पैदा किया, इस तरह इन सब जीवों का अस्तित्व हमें यह बता रहा है कि परमात्मा परमेश्वर अल्लाह के धर्म में मांसहारी और शाकाहारी नियम चले आरहे हैं अगर यह कहें कि शेर, बबर, चीता आदि चौपाया जानवरों पर ज़ुल्म करते हैं ये क्रूर प्राणी हैं वो इन चौपाय जानवरों को फाड़ खाते हैं अगर इन मांसहारी प्राणियों का कार्य ज़ुल्म है तो इस ज़ुल्म का इल्ज़ाम इनके पैदा करने वाले पर लगेगा, इनको पैदा करने वाले ने इनको

फाड़ खाने के लिए पंजे तेज़ नश्तर वाले दिये और दांत मांस चाबने के क़ाबिल दिये और बड़ा ज़ुल्म यह किया की इनके पेट में मांस को हज़म(Digest) करने की शक्ति दी, यह ज़ुल्म वास्तव में परमात्मा परमेश्वर अल्लाह का साबित होता है दूसरे शब्दों में यह कहना पड़ेगा कि आर्य परमात्मा परमेश्वर अल्लाह को ज़ालिम ठहराते हैं।

ऐ हिन्दू भाईयों ! हम से मिलो हम आपको हर तरह से स्वागत करने के लिए तैयार हैं, परमात्मा परमेश्वर अल्लाह मिलाप और एकता चाहता है और शैतान फूट और अलग करना चाहता है, ऐ समझदार भाईयों ! परमात्मा परमेश्वर अल्लाह की तरफ़ आओ शैतान की तरफ़ मत जाओ।

आखिर में मैं परमात्मा परमेश्वर अल्लाह से यह प्रार्थना करता हूँ कि ऐ अल्लाह ! ऐ परमात्मा ! हम तमाम लोगों के दिलों में जो एक दूसरे के प्रति द्वेष है उसको दूर कर और धार्मिक ग्रंथों पर आचरण करने की हमें क्षमता प्रदान कर, **तथास्तु**।

पंडित सूफ़ी रहीम ख़ान क़ादरी M.I.

(शांति धर्म प्रचारक)

Dated : 15th August 2023

KYA MAANS KHAANA PAAP HAI ?

तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रान् सूकरान् महिषान् रुरून् ।
शरभान् गवयान् खड्गान् हरिणाञ्छशशल्लकान् ॥

(श्रीमद्भागवत पुराण :- अध्याय 58, स्कंद 10 श्लोक 15)

इस श्लोक मे यह बात बताई जा रही है कि श्री कृष्ण जी और अर्जुन जी ने वन में जाकर कई बाघ यानी शेर और गाय, भैंस, हिरन, खरगोश और गेंडे का शिकार किया है।

Use QR Code For Video Book →

Visit our Youtube Channels:

Hindu Muslim Uniter / Deendar Channel

Visit our Facebook Page:

https://www.facebook.com/sufiraheemkhan

प्रकाशक : ख़ानक़ाह-ए-सरवर-ए-आलम(जगतगुरू आश्रम)
आसिफ़ नगर, हैद्राबाद-500028, तेलंगाना, भारत।